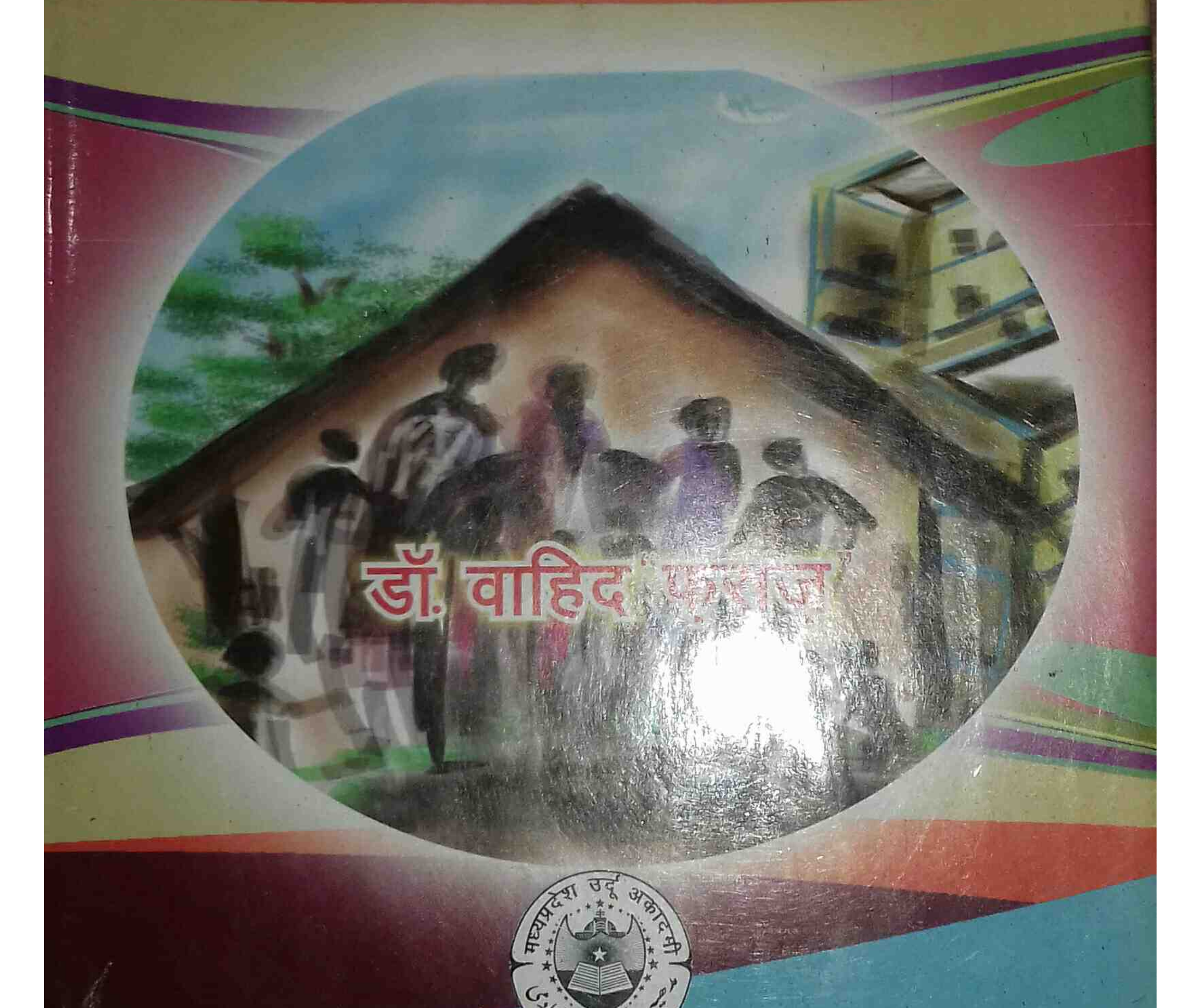
कुनबा



मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी, भोपाल

बारिश थमी नहीं थी कि दरिया उतर गया।।
पलकों पे मेरी ख़ाब था जाने किधर गया।।
कच्चा मकान था तो सभी साथ थे मगर।
पक्का मकान क्या बना कुन्बा बिखर गया।।

इन्तेसाब

शफ़ीक

वालिदेन

मोहतरम हाजी मगफूर सईदुद्दीन शेख़

और

मोहतरमा हज्जानी सर फ़राज़ बी शेख़

तेहरीर–ए मज़ामीन

मेरी क़लम से

खुदाए वाहदहु ला–शरीक ने जब अपनी काएनात में इन्सान को पैदा करने का इरादा किया तब उसने सारे फ़रिश्तों को अर्शे आज़म पर जमा कर उनसे मश्वरा किया मगर तमाम फ़रिश्तों ने अर्ज़ किया ए रब्बूल आलमीन तू जिस इन्सान को ज़मीन पर अपनी इबादत और रियाज़त के लिये पैदा करना चाहता है वो दुनिया में ख़ून ख़राबे पर आमादा होगा, तब ख़ल्लाके काएनात ने इरशाद फ़रमाया ऐ फरिश्तों मैं तुमसे बहतर जानता हूँ। फिर उसने ज़मीन से मिट्टी मंगवा कर सबसे पहले इन्सान की शक्ल में हज़रते आदम को पैदा किया और उनको जन्नत में ही रखा, लेकिन हज़रते आदम का जन्नत में अकेले दिल नहीं लगा, उनका वक़्त कटना बड़ा मुश्किल हुआ वो किसी साथी की कमी महसूस करने लगे तब उन्होंने अल्लाह से दुआ की और अल्लाह ने दुआ कुबूल करते हुए माँ हव्वा को पैदा कर एक नायाब तोहफ़े की शक्ल में हज़रते आदम के सुपुर्द कर दिया, फिर हज़रते आदम और माँ हव्वा जन्नत में बहुत ख़ुश रहने लगे, बस यहीं से इन्सानी फ़ितरत में मोहब्बत शामिल हो गई।

इस तरह अल्लाह ने हज़रते आदम और हव्वा की शक्ल में हम इन्सानों के लिए माँ और बाप का रिश्ता दुनिया में सबसे पहला रिश्ता पैदा किया। जिसे दुनियाए इन्सानियत अज़ल से लेकर अबद तक माँ हव्वा और बाप आदम के नाम से जानती रहेगी। यही वह रिश्ता है जिसके बग़ैर दुनियाए इन्सानियत का तसव्वूर नामुमकिन है, बग़ैर माँ–बाप के दुनिया में कोई पैदा हुआ है न हो सकेगा। सिवाए कुदरते ईलाही के, और इसी रिश्ते से औलाद, भाई बहन जैसे पाक रिश्ते भी पैदा हो कर दुनियावी तमाम रिश्तों में फलते फूलते गये। जो आज एक कुन्बे की शक्ल

में मौजूद हो कर क़यामत तक क़ायम और दायम रहेंगे।

ख़ालिके काएनात ने जब इन्सान को पैदा किया तो उसके जिस्म में उन सारी सलाहियतों को डाल कर उसे सरफ़राज़ फ़रमाया जिससे वो दुनिया की तमाम नेअमतों से लुत्फ़–अन्दोज़ हो सके। खुदा का शुक्र है उसने मुझे भी इन्सान बना कर एक ख़ूबसूरत दिल अता फरमाया और उस दिल में बेपनाह मोहब्बतों का ख़ज़ाना भर दिया जिसमें खुदा की हर मख़लूक़ से मोहब्बत करने की तश्नगी बख़्शी, साथ ही मेरे दिल को मख़सूस तौर पर जिन शख़्सियात से बेपनाह मोहब्बत अता फरमाई वो सिर्फ और सिर्फ माँ–बाप हैं, और इनके बाद एक खानदान की शक्ल में भाई, बहन, बच्चे, और बुजुर्ग हैं। मेरी इस मोहब्बत की शिद्दत मेरे अश्आर में महसूस की जा सकती है।

आम तौर पर शाईरी ख़ाबों ख़यालों और तसव्वूर पर मनहसर होती है मगर मैंनें अपने इस मजमुआ में इन सबसे परहेज़ करते हुए अपनी हक़्क़ानी, अमली और जज़्बाती ज़िन्दगी पेश करने की हत्तल इम्कान कोशिश की है। मेरी इस कुन्बे की शाईरी का मकसद ही इस बदलती मग़रबी नई तहज़ीब में कुम्भलाऐ हुए इन ख़ूनी और पैदाईशी रिश्तों की फिर से आबदारी कर इन्हें सर–सब्ज़ो शादाब करना है। हो सकता है एक आम आदमी मेरे ये अश्आर पढ़ कर इसे सिर्फ़ मेरा अदबी मश्ग़ला ही समझे मगर मैंनें अपने इन अश्आर को ख़ासकर वालदेन के हवाले से लिखे गये क़त्आत को इबादत से कम नहीं लिया है, साथ ही यूँ कह लीजिए कि मैं दुआगो हूँ कि या अल्लाह वालदेन के हवाले से लिखे गये मेरे चन्द अश्आर के सदक़े मुझे दुनिया में कामियाबी और कामरानी के साथ रोज़े महशर में भी इन्हें मेरी बख़्शीश का

ज़रिया बनादे।

मैं शाईरी के फ़िक्रोफ़न से कुल मिला कर नावाक़िफ़ हूँ। मुझे क़त्आ और रुबाई की कुछ कम ही तमीज़ है, मेरे अश्आर फ़ने उरुज़ के ऐतबार से कमज़ौर हो सकते हैं, यक़िनन कुछ ग़लतियाँ भी सरज़द हो सकती हैं, मगर मैंनें जो लिखा है वह माँ–बाप और ख़ानदान की मोहब्बत में डूबकर और खो कर लिखा है इसलिये उम्मीद कर सकता हूँ कि मेरे ये अश्आर आपके पसंदे खास होंगे।

दे शान उन्हें ऐसी के ज़ीशान बना दे।।
हर साल मदीने का तू महमान बना दे।।
पढ़ने जो लगूँ उसको तो पढ़ता ही रहूँ मैं।
चहरा मेरे माँ–बाप का क़ुरआन बना दे।।

डॉ.वाहिद फ़राज़
झाबुआ.

माँ–बाप

(1)

माँ–बाप के जैसा नहीं दिलगीर जहाँ में।।
माँ–बाप ने बख़्शी हमें जागीर जहाँ में।।
दुनिया ही नहीं दीन भी कहता है हमें ये।
माँ–बाप से बढ़ कर तो नहीं पीर जहाँ में।।

(2)

मेरे बच्चों में बुजुर्गों–सी शराफ़त रखना।।
मेरे सीने में ग़रीबों की हिमायत रखना।।
कुछ रखे या न रखे पर ये दुआ है यारब।
मेरे घर में मेरे माँ–बाप सलामत रखना।।

(3)

मेरी बहनों से है माहौल निराला घर में।।
मेरे भाई ने है बच्चों को सम्भाला घर में।
इसी माहौल को या–रब तू बनाए रखना।
मेरे माँ–बाप से रहता है उजाला घर में।।

(4)

मैं ने माँ--बाप के चहरे की तिलावत की है।।
बे–अमल हो के भी ईमाँ की हिफ़ाज़त की है।।
मेरे माँ–बाप की निस्बत ने लिखाया मुझसे।
शाईरी मैं ने नहीं की है ईबादत की है।

(5)

किसी की आह भी हो तो दुआ में ढ़ाल देती है।।
नज़र माँ–बाप की यारो बला को टाल देती है।।
करो माँ–बाप की ख़िदमत दुआएँ लेके देखो तुम।
अगर जो मौत भी आए तो गर्दन डाल देती है।।

(6)

किसी पस्ती से देखो या बलन्दी पर कहीं चढ़ कर।।
किताबें जितनी हैं उनको ज़रा देखो कभी पढ़ कर।।
भरोसा जिन पे है तुमको उन्हें तुम आज़मा लेना।
कोई रिश्ता न पाओगे कभी माँ–बाप से बढ़ कर।।

(7)

कभी इसकी कभी उसकी रहूँ क्यों सबकी ठोकर में।।
ज़रूरत क्या है मुझको सर पटकने की जहाँ भर में।।
नहीं हसरत मुझे कोई कि दुनिया देखने जाऊँ।
मेरे माँ–बाप हैं जब तक मेरी दुनिया मेरे घर में।।

(8)

कहीं पर मौजे दरया है कहीं मेरा सफ़ीना है।।
अक़ीदत और मोहब्बत से मेरा लबरेज़ सीना है।।
मुक़द्दर ले गया मुझको तो मैं उस पार जाऊँगा।
नहीं तो घर में ही माँ–बाप हैं मक्का मदीना है।।

(9)

न ज़मीं की न ज़माँ की न ज़मन की खुश्बू।।
दिल को अच्छी नहीं लगती ये चमन की खुश्बू।।
मुश्को अम्बर भी तरसते हैं अभी तक जिसको।
ऐसी माँ–बाप के आती है बदन की खुश्बू।।

(10)

न पैसा है न इसका हम कोई संताप रखते हैं।।
हमारी फ़िक्र भी अब हम न अपने आप रखते हैं।।
हमें है फ़ख़ इतना कि अभी माँ–बाप ज़िन्दा हैं।
हिफ़ाज़त से हमें घर में अभी माँ–बाप रखते हैं।।

(11)

हर लफ़्ज़ महकता हुआ गुलदान बना दे।।
तू उनकी दुआओं का गुलिस्तान बना दे।।
आँसू मेरे माँ–बाप के शामिले दुआ कर।
आहें मेरे माँ–बाप की लोबान बना दे।।

(12)

दे शान उन्हें ऐसी के ज़ीशान बना दे।।
हर साल मदीने का तू महमान बना दे।।
पढ़ने जो लगूँ उसको तो पढ़ता ही रहूँ मैं।
चहरा मेरे माँ–बाप का कुरआन बना दे।।

(13)

फ़ैज़ पाता है ज़माना वो बशर ज़िन्दा हैं।।
जो निगाहों में भी रखते हैं असर ज़िन्दा हैं।।
क्यों भटकते हो ज़माने में मुक़द्दर ले कर ।
घर में माँ–बाप तुम्हारे जो अगर ज़िन्दा हैं।।

(14)

मुस्कुराते हुए फिर ख़ाब सरहाने लग जाएँ।।
मेरे बच्चे भी अगर खाने कमाने लग जाएँ।।
अपने माँ–बाप का अहसान उतारें कैसे।
सोचने बैठें अगर ये तो ज़माने लग जाएँ।।

(15)

उस शख़्स से मिलने का तो अरमान बहुत है।।
उस शख़्स को इन्सान की पहचान बहुत है।।
लेता है ख़बर मुझसे वो माँ–बाप की अक्सर।
उस शख़्स का मुझ पर यही एहसान बहुत है।।

(16)

पूजा हज़ार करली मगर ताप रह गये।।
माला उठा के ले गये और जाप रह गये।।
बटवारा दोनों भाई ने कुछ इस क़दर किया।
सामान सारा बट गया माँ–बाप रह गये।।

(17)

जन्नत के जैसा घर में वो मंज़र नहीं रहा।।
रहमत भरा जो साया था सर पर नहीं रहा।।
कहने को घर में मेरे यूँ सब कुछ तो है मगर।
माँ–बाप ही नहीं हैं तो घर घर नहीं रहा।।

(18)

वो ये समझ रही थी कि संताप ले लिये।।
नेकी हज़ार कर के भी फिर पाप ले लिये।।
फ़ाक़ों के दिन भले थे कि माँ–बाप साथ थे।
क़िस्मत ने रिज़्क़ देके तो माँ–बाप ले लिये।।

(19)

माँ ने जो लगा या था वो काजल न मिलेगा।।
चादर में ज़माने की वो आँचल न मिलेगा।।
साया जो अगर बाप का उठ जाएगा सर से।
शफ़क़त से भरा सर पे ये बादल न मिलेगा।।

(20)

साया जो रहे सर पे तो फिर डर नहीं लगता।।
क़ातिल का कोई वार भी हम पर नहीं लगता।।
माँ–बाप के क़दमों से ही रौनक़ है जहाँ में।
माँ–बाप न हों घर में तो फिर घर नहीं लगता।।

(21)

झुका सकती नहीं है सर मेरी जाँ आप के आगे।।
डरा सकता नहीं कोई किसी सँताप के आगे।।
हिमालय बन के आतीं हैं बलाएँ गर तो आजाएँ।
क़यामत तक नहीं है कुछ मेरे माँ–बाप के आगे।।

(22)

मुक़द्दर में नहीं है कुछ तो दौलत मिल नहीं सकती।।
ख़ुदा ने गर नहीं चाहा तो इज़्ज़त मिल नहीं सकती।।
है जन्नत माँ के क़दमों में तो वालिद उसका दरवाज़ा।
बिना माँ–बाप की मर्जी के जन्नत मिल नहीं सकती।।

(23)

ये गुलशन ही नहीं दरिया समुन्दर कह–कशाँ मेरे।।
मेरे माँ–बाप गर खुश हैं तो हैं दोनों जहाँ मेरे।।
अब इससे बड़के दुनिया में कोई शय हो नहीं सकती।
ज़मीं है माँ अगर मेरी तो अब्बू आसमाँ मेरे।।

(24)

सर जो माँ–बाप के क़दमों में झुका रक्खा है।।
बस इसी पुल ने जहन्नुम से बचा रक्खा है।।
मेरी औक़ात नहीं है कि यहाँ तक पहुँचू ।
रब ने माँ–बाप के सदक़े में बड़ा रक्खा है।।

(25)

शुक्र एहसान है उसका कि ये तोहफ़ा पाया।।
बाप दादा की तरह हमने भी रुत्बा पाया।।
है ये अफ़सौस कि ख़िदमत न हुई है हमसे।
देर तक हमने भी माँ–बाप को ज़िन्दा पाया।।

(26)

किस तरह मेरी ख़ताओं को भुला देते हैं।।
ऐब मेरे वो ज़माने से छुपा देते हैं।।
मैंने माँ–बाप की ख़िदमत तो नहीं की लेकिन।
मुझको माँ–बाप मेरे फिर भी दुआ देते हैं।।

(27)

अजब रुत्बा मेरे मालिक बना कर तूने रख्खा है।।
मेरा घर खुल्द के जैसा सजा कर तूने रख्खा है।।
करुँ मैं शुक्रिया कैसे अदा तेरी नवाज़िश का।
मेरे माँ–बाप को घर में बिठा कर तूने रख्खा है।।

(28)

निवाला उनके हाथों का मुझे नेअ़मत–सा लगता है।।
क़दम उनके जो पड़ते हैं निशाँ बरकत–सा लगता है।।
ज़ियारत उनके चहरे की मेरी आँखों की ठंडक है।
अगर माँ–बाप हों घर में तो घर जन्नत–सा लगता है।।

(29)

ज़मीं तेरी तेरा आँगन तू चाहे तो ये ले ले घर।।
विरासत से वो सब ले ले तूझे जो भी लगे बेहतर।।
मैं खुश हूँ बस मेरे हिस्से बड़ी दौलत ये आई है।
ज़माने की कोई शय है नहीं माँ–बाप से बड़कर।।

(30)

जो उठा उसने सुबह उठके ज़ियारत की है।।
सबने क़ुरआन से चहरे की तिलावत की है।।
हाथ चूमे कभी क़दमों को भी चूमा उनके।
हमने माँ–बाप के ज़रिये भी इबादत की है।।

(31)

नेक इन्सान बना मुझको तू सच्चा कर दे।।
मैं सरापा हूँ बुरा मुझको तू अच्छा कर दे।।
नाज़ माँ–बाप के सौ बार उठाऊँ दिल से।
मुझको एक बार खुदा मेरे तू बच्चा कर दे।।

(32)

बरगद की तरह मानलो ऊँचा बना रहा।।
बस्ती में एक बुज़ुर्ग–सा दर्जा बना रहा।।
पौते नवासे हो गये घर में मेरे मगर।
माँ–बाप की नज़र में तो बच्चा बना रहा।।

(33)

कोई तावीज़ न दवा रखाना।।
ख़ौफ़ दिल से सभी मिटा रखाना।।
हादसे तुमको छू नहीं सकते।
सर पे माँ–बाप की दुआ रखाना।।

(34)

जो जहाँ चाहे वहाँ उनको जगह मिल जाए।।
उनको फिरदोस के गोशों में जगह मिल जाए।।
मुझको ख़्वाहिश नहीं रिज़वाँ तेरी जन्नत की मगर।
मुझको माँ–बाप के क़दमों में जगह मिल जाए।।

(35)

मौजे तूफ़ाँ में है कश्ती तू किनारा दे दे।।
इसी तूफान से कह दे कि सहारा दे दे।।
अपने आमाल से मुश्किल में धिरा हूँ या–रब।
मुझको माँ–बाप के क़दमों का उतारा दे दे।।

(36)

किताबों से न कॉलेज से न अपने आप से आई।
वो कहते हों तो कहते हों उन्हें जो आपने दी है।।
मिली है जब भी फूरसत तो दबाए पाँव हैं मैंने।
मुझे तो ईल्म की दौलत मेरे माँ–बाप ने दी है।।

(37)

सताया गर मुझे तुमने नहीं चुपचाप बैठूँगा।।
ज़मीनो आसमाँ सारे सभी मैं एक कर दूँगा।।
दुआएँ सर पे है मेरे सितारे तोड़ सकता हूँ।
अभी माँ बाप ज़िन्दा हैं अभी न हार मानूँगा।।

(38)

मेरी झोली में हमेशा ये अमानत रखाना।।
मेरे आमाल की चाहे तो ज़मानत रखाना।।
मैं रहूँ या न रहूँ घर में मगर ए या–रब।
मेरे बच्चे मेरे माँ–बाप सलामत रखाना।।

(39)

ताज रक्खा है जो तूने ये दुआ का सर पर।।
कैसे मुमकिन है बला आये ख़ुदाया सर पर।।
किस तरह शुक्र अदा तेरा करूँगा यारब।
तूने माँ–बाप का रक्खा है जो साया सर पर।।

(40)

झुके जो उनके क़दमों में तो अपना सर समझता हूँ।।
वहीं से फ़ैज़ मिलता है वो सच्चा दर समझता हूँ।।
अगर बोसीदा है तो क्या मेरे माँ–बाप रहते हैं।
इसी बुनियाद पर घर को खुदा का घर समझता हूँ।।

(41)

छीन कर मु:ह से भी खाया है निवाला मैंने।।
बाप क़िस्मत से वो पाया है निराला मैंने।।
चाँद सूरज भी हैं गर्दिश में उसी की ख़ातिर।
माँ की आँखों में जो देखा है उजाला मैंने।।

(42)

अंधेरा देख कर बिजली भी बालो पर जलाती है।।
हवा भी फिर क़दम मेरे हथेली पर उठाती है।।
इरादा जब भी करता हूँ सफ़र पर मैं निकलने का।
दुआ माँ–बाप की सर पर मेरे चादर–सी छाती है।।

(43)

दौलत की तलब है न वो शौहरत में लगे हैं।।
दोज़ख़ का उन्हें डर है न जन्नत में लगे हैं।।
मेहशर में बताएगा ख़ुदा उनके मरातिब।
जो लोग कि माँ–बाप की ख़िदमत में लगे हैं।।

(44)

जिसे वो ढ़ाल देते हैं ज़माने भर में चलते हैं।।
मेरे घर के दीए आँधी में ऊँची लौ से जलते हैं।।
मेरे बच्चों से आती है मेरे अजदाद की ख़ुश्बू।
मेरे बच्चे मेरे माँ–बाप के साये में पलते है।।

(45)

हम जो देखेंगे पर्वत पिधल जाएँगे।।
शेर भी आएगा तो निगल जाएँगे।।
है दुआ साथ जब तक के माँ–बाप की ।
हादसे सर झुका कर निकल जाएँगे।।

(46)

रिश्ते यहाँ वहाँ मैं निभाने नहीं गया।।
तन्हा कभी मैं जश्न मनाने नहीं गया।।
ऊँची पढ़ाई हो कि हुनर का हो मसअला।
माँ–बाप से मैं दूर कमाने नहीं गया।।

(47)

कुछ लोग समझते हुए हिम्मत नहीं करते।।
आईना दिखाने पर भी जूरअत नहीं करते।।
देते हैं सबक़ सबको ही ख़िदमत का वो लेकिन।
वाईज़ भी तो माँ–बाप की ख़िदमत नहीं करते।।

(48)

जिसने माँ–बाप के चहरे को ज़ियारत जाना।।
साथ माँ–बाप का अल्लाह की रहमत जाना।।
उसको बख़्शेगा वो माँ–बाप के सदके जन्नत।
जिसने माँ–बाप की ख़िदमत को इबादत जाना।।

(49)

ठोकरें वो ज़माने की खाता रहा ।।
जो भी माँ–बाप का दिल दुखाता रहा।।
उसको दुनिया की ख़ुशियाँ मिली राह में।
नाज़ माँ–बाप के जो उठाता रहा ।।

(50)

किसी का मश्वरा लेता नहीं एहसान क्या लूँगा।।
अगर लेना हुआ मुझको फ़क़ीरों से दुआ लूँगा।।
मेरे एहबाब मत पूछो विरासत से मैं क्या लूँगा।।
खुशी अब्बू की लूँगा मैं तो अम्मी की रज़ा लूँगा।।

(51)

दुख ने मुझको खूब सताया खुशी अंजान रही।।
दिल में सदमें लाख उठाये होंठों पे मुस्कान रही।।
माँ की दुआएँ बाप का साया जब तक मेरे साथ रहा।
मुश्किल चाहे जैसी हो पर मेरे लिये आसान रही।।

(52)

नाज़ो अन्दाज जो माँ–बाप के पाले होंगे।।
ऐसे बेटे भी ज़माने में निराले होंगे।।
ख़ुल्द ढूँढ़ेगी उन्हें हाथ में रुक्क़ा ले कर।
जिसने माँ–बाप बूढ़ापे में सम्भाले होंगे।।

(53)

कश्ती आँखों को तो अश्कों को समुन्दर कर दे।।
मेरी परवाज़ को अहसास के अन्दर कर दे।।
सदक़ा माँ–बाप के क़दमों का अता कर यारब।
मुझको दुनिया में तू अच्छा सा सुख़नवर कर दे।।

(54)

भूक के आगे तेरी उनका निवाला होगा।।
तुझको हर बार ही गिरते में सम्भाला होगा।।
ठोकरें आज ये खाते हैं ज़माने भर की।
तुझको माँ–बाप ने इस वास्ते पाला होगा।।

(55)

माँ–बाप के जो हक़ में हो खुलकर दुआ करो।।
बख़्शीश जो अपनी चाहो तो ख़िदमत किया करो।।
अपने सिवा किसी को वो जायज़ समझता गर।
औलाद से ये कहता वो सजदा अदा करो।।

(56)

कोई लम्हा मेरे या–रब मुझे अच्छा दे दे।।
मेरी आँखों को कोई ख़्वाब तो सच्चा दे दे।।
मेरी क़िस्मत मेरे आमाल बुरे हों लेकिन।
मुझको माँ–बाप की जूती का ही सदक़ा दे दे।।

(57)

भीख देगा न कोई तुमको उतारा देगा।।
नाखुदा भी न कभी तुमको किनारा देगा।।
जब न होंगे तो बहुत याद ये आएँगे तुम्हें।
कोई माँ–बाप से बढ़ कर न सहारा देगा।।

(58)

विपदाओं से लड़ना है तो स्वयं को फिर तैयार करो।
फूल ही फूल नहीं जीवन में काँटें भी स्वीकार करो।।
रुष्ठ रहे गर मात–पिता और स्वर्ग सिधारे दुनिया से।
काम नहीं कुछ आना है फिर जीवन भर उपकार करो।

(59)

अपने बल पर आगे आओ सपनों को साकार करो।।
कोई चुनौती आती है तो उससे आँखें चार करो।।
ईश्वर ने जो मात–पिता से तुमको ये अवतार दिये।
सेवा कर के इनकी अपने जीवन का उद्धार करो।।

(60)

देखा नहीं किसीने भी इन–सा जहान में।।
फ़रमा दिया है तूने भी या–रब कुरआन में।।
माँ–बाप मेरे रखना तू अपनी अमान में।
रौनक़ बनी हुई है इन्हीं से मकान में।।

(61)

रोशन तमाम क़न्दिलें हो जाएँगी अभी।।
हैरान सारी मुश्किलें हो जाएँगी अभी।।
उड़कर दुआएँ आएँगी माँ–बाप की तो फिर।
आसान सारी मंज़िलें हो जाएँगी अभी।।

(62)

बदलियाँ नूर की सर पर मेरे छा जाती हैं।।
जो अंधरों को मेरे दूर से खा जाती हैं।।
घर से माँ–बाप की चलता हूँ दुआएँ लेकर।
मंज़िले दौड़ के दहलीज़ पे आ जाती हैं।।

(63)

मुझपे जी भर के लुटाई है अताएँ उसने।।
मेरे आमाल ही देखे न ख़ताएँ उसने।।
इस बलन्दी पे जो बैठा हूँ तो उसका है करम।
मेरे माँ–बाप की टाली न दुआएँ उसने।।

(64)

सर पे उनवान उतरते हैं इनायत जैसे।।
शेर की शक्ल में आते हैं करामत जैसे।।
सर जो माँ–बाप के क़दमों में झुका देता हूँ।
फिर वो आते हैं मेरे लब पे तिलावत जैसे।।

(65)

नेक औलाद बना कर ही उठाना मुझको।।
उनकी मर्ज़ी के मुताबिक ही चलाना मुझको।।
हों ख़फ़ा मुझसे न माँ–बाप कभी भी मेरे।
मेरे अल्लाह जहन्नुम से बचाना मुझको।।

(66)

नाज़ माँ–बाप के तुमने जो उठाए होते।।
दिल जो माँ–बाप के तुमने न दुखाए होते।
आज बच्चे भी तुम्हें सर पे उठाए फिरते।
पाँव माँ–बाप के तुमने जो दबाए होते।।

(67)

रोज़ा नमाज़ अ़तार में होगी।।
हर दुआ अश्कबार में होगी।।
ए मसीहा मुझे छुट्टी दे दे।
मैरी माँ इन्तज़ार में होगी।।

(68)

घर में माँ–बाप को या–रब तू बनाए रखना।।
इनको हर करबो बला तू बचाए रखना।।
सर पे बच्चों के है शफ़्क़त भरा साया इनसे।
मेरे आँगन में शजर ऐसे लगाए रखना।।

(69)

बना फिरता था दुनिया में ज़माने से मैं दीवाना।।
खुदा की बन्दगी से तो रहा हर दम मैं बेगाना।।
मेरे आमाल तो मुझको जहन्नुम में ही ले जाते।
मगर माँ–बाप के सदक़े मिला जन्नत का परवाना।।

(70)

ढूँढता हूँ मैं कहाँ और कहाँ रख्खा है।।
मेरी क़िस्मत का ख़ज़ाना तो वहाँ रख्खा है।।
पाँव पड़ते हैं जहाँ उनके वहीं है जन्नत।
मेरे माँ–बाप के क़दमों में जहाँ रख्खा है।।

(71)

ये गाने और बजाने की न ये आलाप की बातें।।
हमें अच्छी नहीं लगतीं ये उनकी आप की बातें।
ज़माने भर की बातों से नहीं है फ़ाएदा कोई।
इबादत ही इबादत है करो माँ–बाप की बातें।।

(72)

दोनों आलम तेरे मौला ने उतारे घर पर।।
सर पटकता है कहाँ तू यूँ किसी के दर पर।।
अपने माँ–बाप के मर्तब को समझले पागल।
ख़ुल्द क़दमों में है और अर्शे–मोअल्ला सर पर।

(73)

ख़फ़ा माँ बाप हो जिससे वो आदत छोड़ देना तुम।।
ग़लत रस्ता तुम्हारा हो तो रस्ता मोड़ देना तुम।।
ज़माने में नहीं रिश्ता कोई माँ–बाप से बड़ कर।
अगर माँ–बाप न चाहें तो रिश्ता तोड़ा देना तुम।।

(74)

ज़माने में नहीं कुछ भी कहीं भी घूम कर देखो।।
इबादत–की सी मस्ती है इसी में झूम कर देखो।।
क़दम माँ–बाप के चूमोगे जन्नत हाथ आएगी।
अगर ज़िन्दा नहीं हैं वो तो तुर्बत चूम कर देखो।।

(75)

अच्छे हैं वही लोग जो वहशत नहीं करते।।
माँ–बाप के पहते हुए हिजरत नहीं करते।।
है उनका ठिकाना तो जहन्नुम ये बता दो।
वो लोग जो माँ–बाप की ख़िदमत नहीं करते।।

(76)

ख़ुदा की रहमतों के मैं असर में रहता हूँ।।
साथ माँ–बाप के मैं उनके घर में रहता हूँ।।
फ़रिश्ते भी शफ़ाअत का मुजदा सुनाते हैं।
मैं हर घड़ी माँ–बाप की नज़र में रहता हूँ।।

(77)

तुझको मुश्किल में खिलाया है निवाला कैसे।।
तू गिरा है जो कभी तुझको सम्भाला कैसे।।
बोझ माँ–बाप बूढ़ा पे में तुझे लगते हैं।
तुझको मालूम है माँ–बाप ने पाला कैसे।।

(78)

तुझपे माँ–बाप ने कब की है इनायत झूठी।।
क्यों बताता है ज़माने को रिवायत झूठी।।
आज भी उनके दिलो–जाँ हैं निछावर तुझ पर।
तेरी माँ–बाप से बन्दे है शिकायत झूठी।।

(79)

कभी अब्बू के कंधों पर उछलना याद आता है।।
कभी अम्मी की गोदी में मचलना याद आता है।।
कहीं राहों में ठोकर से कभी मैं गिर जो जाता हूँ।
वो ऊँगली का पकड़ कर उनकी चलना याद आता है।।

(80)

हमने आदाब हैं बच्चों को सिखाए कितने।।
घर में उनको ये सबक़ हमने पढ़ाए कितने।।
वो जो बिगड़े हैं तो तहज़ीब का मातम क्यों है।
पाँव माँ–बाप के हमने भी दबाए कितने।

(81)

अन्धेरा जब भी होता है उजाला बन के आती है।।
ग़मों की धूप में सर पर वो साया बन के आती है।।
समुन्दर में कभी कश्ती मेरी जब डग–मगाती है।
दुआ माँ–बाप की आगे किनारा बन के आती है।।

(82)

मैंने एक बात ज़माने से छुपा रख्खी है।।
मेरे बच्चों को मगर फिर भी बता रख्खी है।।
मेरी मर्ज़ी के मुताबिक वहाँ दफ़ना देना।
वो जो माँ–बाप के क़दमों में जगह रख्खी है।।

(83)

उनके एहसानों का हर दम हक़ अदा करते चलो।।
जब भी बच्चों में रहो तज़किरा करते चलो।।
बख़्श दे फिर या ईलाही तू मेरे माँ–बाप को।
याद आए जब भी उनकी ये दुआ करते चलो।।

(84)

मुझे कहते है जो भी ये कि मैं दादा के जैसा हूँ।।
दुआएँ उनको मैं यारो सुबह से शाम देता हूँ।।।
उतारा क़ब्र में जिस दिन मेरी पहचान ऐसी थी।
फ़लाँ वालिद हैं मेरे और फ़लाँ माँ का मैं बेटा हूँ।।।

(85)

याद उसको जो करोगे तो इबादत होगी।।
गर जो कुरआन पढ़ोगे तो तिलावत होगी।।
यूँ तो सब पर ही करम उसका बराबर है मगर।
पाँव माँ–बाप के दाबे तो इनायत होगी।।

(86)

सर ऊँचा उठाने से तो अज़मत नहीं मिलती।।
कसरत से कमा लेने से बरकत नहीं मिलती।।
अब भी तुम्हें मौक़ा है उन्हें जा के मनालो।
माँ–बाप जो नाराज़ हों जन्नत नहीं मिलती।।

(87)

शाईरे हिन्द की उनको तू इमामत दे दे।।
वो जो चाहें तो ज़माने की निज़ामत दे दे।।
जो सुने मुझको वो माँ–बाप की अज़मत समझे।
मेरे अश्आर में या–रब वो करामत दे दे।।

(88)

मुसाफ़िर की तरह खुदको हमें रस्ते में रखना है।।
हमेशा आख़री जोड़ा हमें बस्ते में रखना है।।
ख़ुदा का शुक्र है इतना हमारे छेः जो बेटे हैं।
फ़क़त एक दिन का रोज़ा ही हमें हृते में रखना है।।

(89)

उसको दुनिया ने ख़ुद जुदा माना।।
जिसकी मर्ज़ी को ख़ुद ख़ुदा माना।।
उसकी जन्नत भी राह तकती है।
जिसने माँ–बाप का कहा माना।।

(90)

हमको झुकने नहीं देते हैं उठाने वाले।।
हर क़दम पर हमें बैठे हैं बचाने वाले।।
हम क़दम चूम के माँ–बाप के निकले घरसे।
अब किसी राह में ठोकर नहीं खाने वाले।।

(91)

गुम नाम थे जहाँ में हमें नाम मिल गया।।
ख़ुशियों का अम्नो चैन का पैग़ाम मिल गया।।
चूमे थे हमने इश्क़ में माँ–बाप के क़दम।
सदक़े में हमको ख़ुल्द का पैग़ाम मिल गया।।

(92)

ग़रज़ होगी तो दुनिया ये तुझे सर पर बिठालेगी।।
ग़रज़ निकली तो क़दमों पे तेरा ये सर झुकालेगी।।
जो नेकी काम न आए तो इतना याद रख लेना।
दुआ माँ–बाप की तुझको जहन्नुम से बचालेगी।।

(93)

थोड़ी भी नहीं शर्म कि इज़्ज़त नहीं करते।।
पानी भी पिलाने की वो ज़हमत नहीं करते।।
बख़्शेगा ख़ुदा सबको मगर उनको ही नहीं बस।
जो लोग कि माँ–बाप की ख़िदमत नहीं करते।।

(94)

जिसने गोदी में खिलाया देर तक।।
ईल्म जिसने है सिखाया देर तक।।
या ख़ुदा उस्ताद और माँ–बाप का।
मेरे सर पे रखना साया देर तक।।

(95)

बड़े बूढ़े जो घर में हैं अदालत की ज़रूरत क्या।।
ज़माने में किसी की फिर इनायत की ज़रूरत क्या।।
कमाई घर में ही करना कभी परदेस मत जाना।
अभी माँ–बाप ज़िन्दा हैं तो दौलत ज़रूरत क्या।।

(96)

जो बरकत घर में लाते थे वही इन्साँ नहीं आते।।
मेरे घर फिर से रहमत के नज़र इम्काँ नहीं आते।।
करो माँ–बाप की इज़्ज़त इन्हीं से घर की रौनक है।
नहीं है घर मेरे माँ–बाप तो महमाँ नहीं आते।।

(97)

फ़क़त एक नाम ही उनका हमे शक़्त–सा लगता है।।
जो उनका साथ हो तो फिर हमें बरकत–सा लगता है।।
ज़माने भर की दौलत से कभी रौनक़ नहीं आती।
अगर माँ–बाप हैं घर में तो घर जन्नत–सा लगता है।।

(98)

कमाई उम्र की वारी मेरे माँ–बाप ने मुझ पर।।
यूँ बाज़ी जीत के हारी मेरे माँ–बाप ने मुझ पर।।
वो मेरी खाल के जूते जो पहनें भी तो कम ही है।
लूटा दी ज़िन्दगी सारी मेरे माँ–बाप ने मुझ पर।।

(99)

मैं जो जन्नत में खड़ा हूँ तो खड़ा रहने दो।।
एक अंगुठी में नगीने–सा जड़ा रहने दो।।
तुमको करनी है जो तफ़रीह ज़माने की करो।
मुझको माँ–बाप के क़दमों में पड़ा रहने दो।।

(100)

वो न समझें कि मैं घबरा के सिमट जाऊँगा।।
मुझमें दम है कि मैं बाज़ी ही पलट जाऊँगा।।
आंधियाँ सर को झुका कर के निकल जाएँगी।
मैं जो माँ–बाप के दामन से लिपट जाऊँगा।।

(101)

मेरी मुश्किल को आसाँ अब मेरे मुश्किल–कुशा कर दे।।
मसीहा हार बैठे हैं तू ही मेरी दवा कर दे।।
नहीं आमाल हैं ऐसे कि सीधे माँग लूँ तुझसे।
मुझे माँ–बाप का सदक़ा मेरे मौला अता कर दे।।

(102)

कभी रोटी नहीं होती कभी टुकड़े न होते थे।।
मेरे बचपन में फ़ाक़ों से मेरे माँ–बाप रहते थे।।
मयस्सर हो भी जाता गर ज़रा–सा भी कभी खाना।
खिला कर पेट भर मुझको वो पानी पी के सोते थे।।

(103)

मेरे सर पर न कोई ताज नुमाया रखना।।
तू भरम मेरी दुआओं का ख़ुदाया रखना।।
मेरे होंठों पे फ़क़त ये ही दुआ है यारब।
मेरे सर पर मेरे माँ–बाप का साया रखना।।

(104)

ठोकरें क्यों मैं किसी ग़ैर की खाने जाऊँ।।
बे–वजह नाज़ भला क्यों मैं उठाने जाऊँ।।
घर में माँ–बाप मेरे हैं तो कमी ही क्या है।
क्या ग़रज़ मुझको जो परदेस कमाने जाऊँ।।

(105)

माँ-बाप मेरे रखना तू अपनी अमान में।।
रौनक़ बनी हुई है इन्हीं से मकान में।।
माँ-बाप-सी जो हमको मोहब्बत अता करे।
रिश्ता नहीं है कोई भी ऐसा जहान में।।

(106)

ज़माना जाँ लुटाता है मुझे वो शान बख़्शी है।।
कभी ये सर नहीं झुकता ग़ज़ब की आन बख़्शी है।।
हज़ारों में खड़ा हो कर भी मैं यकता ही दिखता हूँ।
मुझे माँ-बाप ने मेरे अलग पहचान बख़्शी है।।

☆☆☆

माँ

(1)

माँ जो राज़ी है तो नाराज़ न मौला होगा।।
माँ की पलकों पे दुआओं का मुसल्ला होगा।।
माँ के क़दमों में तो जन्नत है यक़ीनन लेकिन।
माँ के माथे पे रखा अर्शे-मोअल्ला होगा।।

(2)

माँ की रज़ा में राज़ी मेरा हक़-तआला है।।
माँ है जो मेरे घर में तो हरसू उजाला है।।
काँधे पे सर जो माँ के कभी मैंने रख दिया।
ऐसा लगा है जैसे ख़ुदा ने सम्भाला है।।

(3)

माँ को आँखों में रखोगे तो इबादत होगी।।
नाम माँ का जो रटोगे तो तिलावत होगी।।
ख़ौफ़ खाने की ज़माने में ज़रुरत क्या है।
माँ के क़दमों में रहोगे तो हिफ़ाज़त होगी।।

(4)

मुझे परवह नहीं इसकी बग़ावत कौन करता है।।
यहाँ दुश्मन से भी यारो अदावत कौन करता है।।
मेरे सर पर मेरी माँ की दुआएँ साथ चलती हैं।
मुझे मालूम है मेरी हिफ़ाज़त कौन करता है।।

(5)

मुझे वो आह भी तन्हा कभी भरने नहीं देगी।।
क़ज़ा को भी वो मनमानी कभी करने नहीं देगी।।
उठा कर जान रख देगी वो मेरी मौत के आगे।
मेरी माँ घर में है मुझको अभी मरने नहीं देगी।।

(6)

मेरे ख़ातिर वो ज़िन्दा है मैं ज़िन्दा हूँ उसी दम से।।
क़ज़ा को दूर ही रखना जहाँ तक हो अभी हम से।।
कोई मुश्किल परेशानी न हो रंजो अ़लम कोई।
मेरे मालिक बचाना तू मेरी माँ को हर एक ग़म से।।

(7)

मुश्किलें आती नहीं है कि दुआ आती है।।
दिल के घबराने पे आँचल की हवा आती है।।
मैं जो करवट भी बदलता हूँ अगर रातों में।
माँ की चुड़ी के खनकने की सदा आती है।।

(8)

मुश्किलों में जो कभी मेरी ये जाँ होती है।।
एक आवाज़-सी आती है अज़ाँ होती है।।
होश आने पे जो खुलती है ये आँखें मेरी।
मुझको आँचल में छुपाए हुए माँ होती है।।

(9)

मुसीबत से बचालेगी हमेशा आस रहती है।।
मैं उसके पास रहता हूँ वो मेरे पास रहती है।।
तसव्वूर से भी मेरे वो कभी ओझल नहीं होती।
मेरे ख़ाबों ख़यालों में मिरी माँ साथ रहती है।।

(10)

कभी सदक़ा लुटाती है कभी लंगर खिलाती है।।
दुआएँ उम्र की दे कर मुझे सीने लगाती है।।
बलाएँ जिसको कहते हैं मुझे वो छू नहीं सकती।
मेरी माँ फूक कर मुझको अभी पानी पिलाती है।।

(11)

किसकी बिसात थी मुझे लाता निकाल कर।।
आए थे जितने भागे हैं पानी उछाल कर।।
तूफ़ान मेरी कश्ती निगल तो गया मगर।
माँ ने निकाला मुझको समन्दर खंगाल कर।।

(12)

तुम्हें घर में तुम्हारी माँ से अच्छा कौन देखेगा।।
बुढापे में बना कर तुमको बच्चा कौन देखेगा।।
ज़रासी देर हो जाए तो आ जाती है रस्ते पर।
अगर जो माँ नहीं होगी तो रस्ता कौन देखेगा।।

(13)

शाम होगी न कहीं पर भी सवेरा होगा।।
हर क़दम पर तुम्हें सदमात ने घेरा होगा।।
तुम दीए लाख जलाओ या उगाओ सूरज।
माँ न होगी तो ज़माने में अंधेरा होगा।।

(14)

सफ़र में जब भी जाता हूँ तो तोशा डाल देती है।।
फिरा कर हाथ सर पर वो भरोसा डाल देती है।।
तलाशी रोज़ माँ मेरी मेरे जेबों की लेती है।
अगर ख़ाली जो मिल जाए तो पैसा डाल देती है।।

(15)

उसे जब याद आती हैं तो आँसू ढाल देता है।।
सबब पूछें जो बच्चे से तो हँस के टाल देता है।।
सुना था उसने अब्बू से कि माँ जन्नत में रहती है।
वो पोली क़ब्र में जा कर के चिठ्ठी डाल देता है।।

(16)

निगाहें मुन्तज़िर होगी दुआओं की झड़ी होगी।।
वो खुद से बेख़बर होगी उसे मेरी पड़ी होगी।।
सितारों थक गये हो तो चलो अब तुम भी सो जाओ।
दीए रोशन किये आँगन में मेरी माँ खड़ी होगी।।

(17)

नज़र जुल्मत में भी रह कर नज़ारा ढूँढ़ लेती है।।
मेरी हस्ती जो गिरती है सहारा ढूँढ़ लेती है।।
क़दम माँ के पकड कर जब कभी मैं बैठ जाता हूँ।।
अगर तूफ़ाँ में हो कश्ती किनारा ढूँढ़ लेती है।।

(18)

दिल मेरा ये शाद बहुत है।।
ख़ुशियों से आबाद बहुत है।।
राज़ फ़क़त है इसका इतना।
इसमें माँ की याद बहुत है।।

(19)

बीबी बच्चे सबसे ज़्यादा माँ से जिसको प्यार नहीं है।।
दोनों जहाँ में उसका फिर तो कोई भी ग़मख़्वार नहीं।।
लाख करे वो नेक अमल और लाख दआएँ ले ले पर।
मेरी नज़र में ऐसा बन्दा जननत का हक़दार नहीं।।

(20)

समझ में कुछ नहीं आता कि क्या क्या छोड़ आए हैं।।
ज़रूरत क्या थी हमको जो कि कुन्बा छोड़ आए हैं।।
वो जो मौसी हमें अपना सगा बेटा समझती थी।
बुढ़ापे में सिसकती हम वो ममता छोड़ आए हैं।।

(21)

न इज़्ज़त रास आएगी न शोहरत रास आएगी।।
बिना तेरे ये दुनिया की न दौलत रास आएगी।।
कहुँगा रोज़े महशर भी ईलाही तेरी जन्नत में।
अगर माँ साथ में होगी तो जन्नत रास आएगी।।

(22)

उसे जब प्यास लगती है मुझे पानी पिलाती है।।
कभी मैं लेट जाता हूँ मेरा माथा दबाती है।।
मैं खाया हूँ कि भुका हूँ किसी को कुछ नहीं परवह।
मगर माँ है कि खाए पे मुझे जबरन खिलाती है।।

(23)

ग़ुर्बत ने बचपने में अजब दिन दिखाए थे।।
माँ ने इधर उधर से जो टुकड़े जुटाए थे।।
बासी हज़ार हो के भी लज़्ज़त अजीब थी।
माँ ने जो अपने हाथ से हमको खिलाए थे।।

(24)

करुँ मैं उम्र भर ख़िदमत मेरी माँ साथ में रखना।।
नहीं इससे बड़ी रहमत मेरी माँ साथ में रखना।।
मेरे मौला मेरी आख़िर तमन्ना ये भी पूरी हो।
अगर तू बख़्श दे जन्नत मेरी माँ साथ में रखना।।

(25)

बे-चेन वो हुई मैं इधर से उधर गया।।
आई है मेरे पीछे मैं उठ कर जिधर गया।।
नज़रों से दूर मुझको वो करती नहीं कभी।
घर में भी ढूँढ़ती है कि बेटा किधर गया।।

(26)

वो ख़न्जर टूट जाता है जो मुझ पे वार करता है।।
कोई तो है जो दुश्मन को मेरे लाचार करता है।।
मुसीबत से बचाने को दुआ माँ भेज देती है।
अगर कश्ती भंवर में हो बबन्डर पार करता है।।

(27)

ज़ुबाँ जब कप कपाई तो मेरी गुतार में आई।।
थके जब पाँव मेरे तो वही र्तार में आई।।
मेरा तरज़े सुख़न जब भी कहीं पर लड़खड़ाया है।
बड़ी शिद्दत से माँ मेरी मेरे अश्आर में आई।।

(28)

गुलाबो मोगरा चम्पा चमेली नस्तरन जैसी।।
ज़ुबाँ वो जब भी खोले तो महक उर्दू सी आती है।।
ज़रूरत इत्र संदल की नहीं होती कभी हमको।
अगर माँ घर में होती है अजब ख़ुश्बू सी आती है।।

(21)

न इज़्ज़त रास आएगी न शोहरत रास आएगी।।
बिना तेरे ये दुनिया की न दौलत रास आएगी।।
कहुँगा रोज़े महशर भी ईलाही तेरी जन्नत में।
अगर माँ साथ में होगी तो जन्नत रास आएगी।।

(22)

उसे जब प्यास लगती है मुझे पानी पिलाती है।।
कभी मैं लेट जाता हूँ मेरा माथा दबाती है।।
मैं खाया हूँ कि भुका हूँ किसी को कुछ नहीं परवह।
मगर माँ है कि खाए पे मुझे जबरन खिलाती है।।

(23)

गुर्बत ने बचपने में अजब दिन दिखाए थे।।
माँ ने इधर उधर से जो टुकड़े जुटाए थे।।
बासी हज़ार हो के भी लज़्ज़त अजीब थी।
माँ ने जो अपने हाथ से हमको खिलाए थे।।

(24)

करूँ मैं उम्र भर ख़िदमत मेरी माँ साथ में रखना।।
नहीं इससे बड़ी रहमत मेरी माँ साथ में रखना।।
मेरे मौला मेरी आख़िर तमन्ना ये भी पूरी हो।
अगर तू बख़्श दे जन्नत मेरी माँ साथ में रखना।।

(25)

बे-चेन वो हुई मैं इधर से उधर गया।।
आई है मेरे पीछे मैं उठ कर जिधर गया।।
नज़रों से दूर मुझको वो करती नहीं कभी।
घर में भी ढूँढ़ती है कि बेटा किधर गया।।

(26)

वो ख़न्जर टूट जाता है जो मुझ पे वार करता है।।
कोई तो है जो दुश्मन को मेरे लाचार करता है।।
मुसीबत से बचाने को दुआ माँ भेज देती है।
अगर कश्ती भंवर में हो बबन्डर पार करता है।।

(27)

ज़ुबाँ जब कप कपाई तो मेरी गुतार में आई।।
थके जब पाँव मेरे तो वही रतार में आई।।
मेरा तरज़े सुख़न जब भी कहीं पर लड़खड़ाया है।
बड़ी शिद्दत से माँ मेरी मेरे अश्आर में आई।।

(28)

गुलाबो मोगरा चम्पा चमेली नस्तरन जैसी।।
ज़ुबाँ वो जब भी खोले तो महक उर्दू सी आती है।।
ज़रूरत इत्र संदल की नहीं होती कभी हमको।
अगर माँ घर में होती है अजब ख़ुश्बू सी आती है।।

(29)

बहुत दिन हो गये मैंने अभी कुरआँ नहीं खोला।।
कहूँ फिर झूठ कैसे कि तिलावत कर के आया हूँ।।
मेरी आँखों की खुश्बू का मुझे इतना पता है बस।
मैं अपनी माँ के चहरे की ज़ियारत कर के आया हूँ।।

(30)

गोदी में ले लिया है गुडाली नहीं रखा।।
माँ ने कभी भी मुझको सवाली नहीं रखा।।
एक दिन टपक पढ़े थे मेरी आँख से आँसू।
उस दिन से माँ ने जेब को ख़ाली नहीं रखा।।

(31)

जहाँ में ईल्म जितने हैं उन्हें आँखों में रखती है।
मेरी माँ सामने है तो किताबों की ज़रूरत क्या।।
वो बैठी है अगर घर में तो सारा घर महकता है।।
मेरे घर में बताओ तुम गुलाबों की ज़रूरत क्या।।

(32)

वो ख़तरा भाँप लेती है तो मुझको साथ रखती है।।
कहीं जाने नहीं देती हमेशा पास रखती है।।
बलाएँ गिड़गिड़ाती हैं झुकाए सर को क़दमों में।
मेरी माँ जब कभी सर पर जो मेरे हाथ रखती है।।

(33)

बुरे आमाल हैं मेरे जो पुछा तो बता दुँगा।।
मैं ख़ाली हाथ आया हूँ फ़रिश्तों को दिखा दुँगा।।
ख़ुदा पुछेगा बख्शीश का कोई सामाँ नहीं लाया।
लिखा जो माँ पे है मैंने वही सब मैं सुना दुँगा।।

(34)

वो मेरी छत पे न आएगा पता था मुझको।।
ये तो एहसास बहुत पहले हुआ था मुझको।।
वो उसी रोज़ ख़फ़ा हो के चला था घर से।
माँ ने जिस रोज़ मेरा चाँद कहा था मुझक।।

(35)

बात करता हूँ तो इज़हार में आ जाती है।।
आँख खुलत्ती है तो दीदार में आ जाती है।।
मैं जो पढ़ता हूँ तो पढ़ती है कसीदा माँ भी।
शेर लिखाता हूँ तो अश्आर में आ जाती है।।

(36)

शिद्दत से थी तलाश मेरी उससे पूछिये ।।
ढुँढा हर एक सू मुझे हर इक गली गई ।।
लेने को जान आई थी मेरी क़ज़ा मगर ।।
ख़िदमत में माँ की देख के मुझको चली गई ।।

(37)

बच्चों को ला के कोई खिलौना न दे सका।।
सपना किसी को कोई सलोना न दे सका।।
अब भी कचोके देती है गुर्बत मिरी मुझे।
माँ को कभी मैं ला के बिछौना न दे सका।।

(38)

दमे आख़िर तिरी गोदी में होता सर तो अच्छा था।।
मुझे मरने को मिल जाता तेरा बिस्तर तो अच्छा था।।
तिरे क़दमों की मिट्टी माँ मिरे लाशे को मिल जाती।
कफ़न के वास्ते मिलती तिरी चादर तो अच्छा था।।

(39)

रहे ख़ामोश दरिया भी तो कश्ती टूट जाती है।।
सितारे जगमगाते हैं कि क़िस्मत फूट जाती है।।
इबादत लाख तुम करलो मगर ये याद भी रखना।
ख़ुदा नाराज़ रहता है अगर माँ रुठ जाती है।।

(40)

सुकूनो चैन खोया है बहुत बैज़ार रहता हूँ।।
मुसीबत सर उठाती है बहुत लाचार रहता हूँ।।
कहीं नाराज़ होकर तो नहीं बैठी है माँ मुझसे।
कई दिन से ये देखा है बहुत बीमार रहता हूँ।।

(41)

अपने हर ग़म को वो सीने में छुपा लेती है।।
अपने चहरे को वो ख़ुशियों से सजा लेती।।
मेरी आँखों में अगर देखले आँसू कोई।
माँ मुझे दौड़ के सीने से लगा लेती है।।

(42)

हर खता पर वो मेरी मुझको बचा लेती है।।
मेरे इल्ज़ाम तलक सर पे उठा लेती है।।
डर से अब्बू के मैं छुपता हूँ शरारत कर के।
माँ मुझे ढूँढ के आँचल में छुपा लेती है।।

(43)

जो करनी थी मुझे ख़िदमत भला मैं कर नहीं पाया।।
हुई बीमार तू जब भी दवा मैं कर नहीं पाया।।
अगर जो हो सके तो माँ मुझे मुआफ़ कर देना।
तेरे तो दूध का हक़ भी अदा मैं कर नहीं पाया।।

(44)

घर में ही बैठे बैठे मुक़द्दर सजा लिया।।
जाने का हमने ख़ुल्द में रस्ता बना लिया।।
आमाल अपने ऐसे थे नाराज़ था ख़ुदा।
माँ के दबा के पाँव ख़ुदा को मना लिया।।

(45)

मैं मेहनत कर के भी सपने सभी के तोड़ आया हूँ।।
मुक़द्दर पर हूँ शर्मिन्दा कहाँ सर फोड़ आया हूँ।।
मेरी माँ ख़ूश है इतने में कि जल्दी आ गया घर पर।
उसे सदमा नहीं इसका कि क्या क्या छोड़ आया हूँ।।

(46)

बीमार माँ की घर में भी ख़िदमत ज़रुरी है।।
कुरआन घर में है तो तिलावत ज़रुरी है।।
माँ की मोहब्बतें ही नहीं छोड़ती मुझे।
बच्चों के वास्ते मेरी हिजरत ज़रुरी है।।

(47)

तुझको छाती से कलेजे से लगाने वाली।।
लोरियाँ गा के मोहब्बत से सुलाने वाली।।
सारे रिश्ते तुझे मिल जाएँ ये मुमकिन है मगर।
माँ न मिल पाएगी फिर दूध पिलाने वाली।।

(48)

शाख़ों पे था गुज़ारा समर तक नहीं गये।।
माँ की रज़ा न थी तो उधर तक नहीं गये।।
ऊँची पढ़ाई कर के जो वापस न आ सकें।
इस ख़ौफ़ से तो पढ़ने शहर तक नहीं गये।।

(49)

फिर फ़िक्र उसे मेरी दिन रात रही है।।
यादों की मेरी जैसे कि बारात रही है।।
जिस दिन से कमाई को मैं परदेस में आया।
उस दिन से दुआ माँ की मेरे साथ रही है।।

(50)

मौसी को हमने देखा तो माँ–सी लगी है फिर।।
बोली वो मीठी अपनी ज़ुबाँ–सी लगी है फिर।।
पढ़ने को हम नमाज़ लो फिर घर में आ गये।
माँ की पूकार हमको अज़ाँ–सी लगी है फिर।।

(51)

ऐसा लगता था कि रहमत में बुलाया मुझको।।
जब भी ख़िदमत में मेरी माँ ने बुलाया मुझको।।
फिर जहन्नुम से बुलाएँगे ये रिज़वाँ ख़ुद ही।
गर जो जन्नत में मिरी माँ ने बुलाया मुझको।।

(52)

ये शहादत का जुनू हद से गुज़र ही जाए।
जिस्म अज़मत को बचाने में बिखर ही जाए।
लाश देखेगी अगर माँ तो क़यामत होगी।
घर पे अच्छा है शहादत की ख़बर ही जाए।

(53)

कोई आहट जो सुनी है तो लगा तू आई।।
मेरी हसरत तेरी साँसों को भला छू आई।।
तेरे माथे की जो अज़मत है ख़ुदा खुद जाने।
तेरे क़दमों से तो माँ ख़ुल्द की ख़ुश्बू आई।।

(54)

क़ैद से जैसे कोई आज परिन्दा निकला।
मेरी गर्दन से यूँ ही मौत का फन्दा निकला।।
रोज़ बिस्तर से मैं जागा भी तो मुर्दा ही रहा।
आज माँ ने जो जगाया तो मैं ज़िन्दा निकला।।

(55)

न मालोज़र ही देता है न ये टकसाल देता है।।
अगर माँ कुछ भी माँगे तो ये हँस के टाल देता है।।
तसल्ली फिर भी मिलती है ये माँ की रुह से पूछो।
जो मिट्टी क़ब्र पे आकर के बेटा डाल देता है।।

(56)

मुझे जब चूमती हो वो गले से जब लगाती हो।।
वो जो बाहों के झूले में मुझे झूला झुलाती हो।।
तराने बुलबुलें देखो नहीं तुम छेड़ना हरगीज़।
कभी कँधे पे डाले माँ मुझे लोरी सुनाती हो।।

(57)

करूँ क्या चान्द तारों की जो चादर जग–मगाती है।।
नहीं भाती जो सावन में ये धरती मुस्कुराती है।।
समुन्दर की सतह पर झिल–मिलाता देख कर पानी।
मुझे माँ की फटी मैली वो चादर याद आती है।।

(58)

सर से हमारे आज भी अज़ामत नहीं गई।।
टूटे हजा़र बार भी हिम्मत नहीं गई।।
घर में ग़रीबी मुफ़लिसी बैठी रही मगर।
माँ के क़दम थे घर में तो बरकत नहीं गई।।

(59)

फ़रेब खाते हैं बच्चे भी थप्पियाँ ले कर।।
सुलाके भूका वो रोती है सिसकियाँ ले कर।
कहा है माँ ने कि अब्बू अगर नहीं आए।
फ़रिश्ते आएँगे बच्चों की रोटियाँ ले कर।।

(60)

हर घड़ी रहता है माहौल सुहाना घर में।।
मेरे बच्चों से है खुशियों का ख़ज़ाना घर में।।
भाई बहनें सभी रहते हैं इकठ्ठा हो कर।
माँ खिलाती है बिठा कर हमें खाना घर में।।

(61)

कहने को ज़माने में यूँ क्या क्या नहीं बदला।।
माँ ने कभी हाथों का निवाला नहीं बदला।।
बेटे के लिये जा के वो चप्पल तो ले आई।
मुदत्त से मगर उसने दुपट्टा नहीं बदला।

(62)

अँधेरा हो नहीं पाता उजाला बन के आती है।।
वो सर पर धूप से पहले ही साया बन के आती है।।
ज़रुरत का मुझे एहसास माँ होने नहीं देती।
वो खुश्की होंठ पर देखे तो दरिया बन के आती है।।

(63)

खुदा की नेअ़मतें सर पर मेरे भर पूर रहती हैं।।
अंधेरे में भी आँखें ये मिरी पूर नूर रहती हैं।।
मेरे घर आ नहीं सकती मुझे वो छू नहीं सकती।
मैं माँ के साथ रहता हूँ बलाएँ दूर रहती हैं।।

(64)

यादों में उसके क़ीमती रातें चली गई।।
फिर उसके इन्तज़ार में आँखें चली गई।।
बेटा विदेश जा के कमाई में खो गया।
माँ की बची हुई भी वो साँसें चली गई।।

(65)

आए खिलौने वाले तो सबको भगा दिये।।
सौ–सौ बहाने कर के भी आगे बड़ा दिये।।
रोए अगर जो बच्चे तो फिर माँ ने यूँ किया।
आँगन से मिट्टी लेके खलौने बना दिये।।

(66)

सर जो ताज़िमे मोहब्बत में झुकाया तू ने।।
अपनी सोई हुई क़िस्मत को जगाया तूने।।
फ़िक्र करते हैं जो जन्नत की ज़माने मे उन्हें।
माँ के क़दमों में है जन्नत ये बताया तू ने।।

(67)

अपने होंठों पे सजाए वो दुआ आती है।।
साथ लेकर के वो आँचल की घटा आती है।।
जब भी सुनती है कि बीमार हुआ है बेटा।
ख़ाक की शक्ल में लेकर वो दवा आती है।।

(68)

नज़रो से अपनी दूर अगर माँ चली गई।।
ऐसा लगा बदन से मिरे जाँ चली गई।।
करता था जिसकी रोज़ तिलावत मैं बा–वज़ू।
लेकर वो जैसे साथ में क़ुरआँ चली गई।।

(69)

अदालत घर में लगती है जो माँ सुनवाई करती है।।
दलीले झुठी सच्ची सुनके भी भरपाई करती है।।
उधड़ने ही नहीं देती कभी वो ख़ून के रिश्ते।
कहीं टाँके लगाती है कहीं तुरपाई करती है।।

(70)

माँ की ख़िदमत से बड़ी और भी दौलत क्या है।।
माँ के क़दमों से हसीं और भी जन्नत क्या है।।
मुश्को अम्बर यही कहते हैं कि घर में तुझको।
माँ के रहते हुए ख़ुश्बू की ज़रुरत क्या है।।

(71)

बीमार मुझको देख के सदका लुटा दिया।।
अच्छा मैं हो गया हूँ तो लँगर खिला दिया।।
माँ ने मेरी यूँ रख लिया रोज़ा भी ईद का।
थोड़ी रकम बची थी तो कुर्ता सिला दिया।।

(72)

सब्र की यूँ मिसाल देती है।।
अपने ग़म को उछाल देती है।।
हाथ रखती है सर पे ममता का।
ज़िन्दगी जब सवाल देती है।।

(73)

माँ के होंठों पे दुआ रख्खी है।।
माँ के हाथों में दवा रख्खी है।।
ऐ तबिबों ज़रा सुनलो तुम भी।
माँ के क़दमों में शिफ़ा रख्खी है।।

(74)

बक़्त मेरा सँवर गया होता।।
दिल मुरादों से भर गया होता।।
मौत पर अपनी रक्स करता मैं।
माँ के पहलू में मर गया होता।।

(75)

चाक दामन को तुम्हारे नहीं सिलने वाली।।
फिर कली शाख़ पे ऐसी नहीं खिलने वाली।।
यूँ तो हर शय ही ज़माने में मिलेगी लेकिन।
माँ जो खो दोगे तो यारो नहीं मिलने वाली।।

(76)

जिस्म होता है जाँ नहीं होती।।
जैसे मुह में ज़ुबाँ नहीं होती।।
उन घरों के उजाले रोते हैं।
जिन घरों में कि माँ नहीं होती।।

(77)

न मैं दिल ढूँढ़ रहा हूँ न मैं जाँ ढूँढ़ रहा हूँ।।
अपने घर में ही मैं जन्नत के निशाँ ढूँढ़ रहा हूँ।।
लौट आया हूँ मैं मजदूरी से वापस घर में ।
फिर थकन अपनी मिटाने को मैं माँ ढूँढ़ रहा हूँ।।

(78)

बिना उसके तो मेरे घर की क़ीमत बैठ जाती है।।
ये मैंने बारहा देखा है शौहरत बैठ जाती है।।
मेरे घर से फ़क़ीरों को कोई सिक्का नहीं देता।
अगर माँ घर नहीं हो तो सख़ावत बैठ जाती है।।

(79)

वो चलाते हैं किधर और किधर लगता है।।
मुझ पे मारा हुआ हर तीर उधर लगता है।।
हादसे आ के मेरी राह में मर जाते हैं।
ये मेरी माँ की दुआओं का असर लगता है।।

(80)

ये मोहब्बत नहीं होती ये फ़साने नहीं होते।।
ये जो मंज़र है निगाहों में सुहाने नहीं होते।।
माँ ये कहती है कि औरत को बचा ले बेटा।
ये जो पैदा नहीं होती तो ज़माने नहीं होते।।

(81)

यहाँ हर शय है अन्जानी मगर रिश्ता निभाती है।।
ये विरानी है कैसी जो कि मेरे मन को भाती है।।
यहीं पर दन है तू ये मेरा एहसास कहता है।
इसी मिट्टी से माँ तेरी मुझे खुश्बू–सी आती है।।

(82)

जेब ख़ाली भी हों हाथों में सख़ावत देखी।।
सूखे टुकड़ों में भी माँ के तो है नेअमत देखी।।
रात फिर मुझको फ़रिश्तों ने दिखाई जन्नत।
माँ के क़दमों में जो सोया तो करामत देखी।।

(83)

ग़मकी बदली जो कभी ज़िस्त पे छा जाती है।।
बर्क़ जब आ के नशेमन को जला जाती है।।
हाथ उठते हैं दुआ को कि ये हो जाता है।
माँ दीए ले के मेरे सामने आ जाती है।।

(84)

जुबाँ पर कब मिरे कोई कभी फ़रियाद आती है।।
किसी की याद भी आए तो माँ के बाद आती है।।
पिलाती है कभी घर में जो बकरी दूध बच्चों को।
मैं बच्चा बन के रोता हूँ मुझे माँ याद आती है।।

(85)

दुआ जब तक तिरी मेरे लिये सौग़ात में होगी।।
बला कैसी भी आयेगी मगर औक़ात में होगी।।
तेरा जो साथ है तो माँ मुझे कुछ हो नहीं सकता।
अगर जो मौत भी आई तो वो ही मात में होगी।।

(86)

रंज कैसा भी हो एक पल में भुला देती है।।
माँ तो फिर माँ है जो रोतों को हँसा देती है।।
चैन की नींद वो सोती है तभी रातों में।
थप्पियाँ दे के जो बच्चों को सुला देती है।।

(87)

तेरे दीदार की खुश्बू मेरी पलकों में रहती है।।
तेरे आगे तो मेरी हर घड़ी सजदों में रहती है।।
मुझे हसरत नहीं जन्नत में जाने की तेरे रहते।
मेरी जन्नत तो मेरी माँ तेरे क़दमों में रहती है।।

(88)

पलभर उदास उसने न होने दिया मुझे।।
भूका कभी भी यारो न सोने दिया मुझे।।
आँखें मेरी जो नम हुई बेबस वो रो-पड़ी।
तन्हा कभी भी माँ ने न रोने दिया मुझे।।

(89)

तेरी कोठी है मगर मैं तो मकाँ रखता हूँ।।
घर ये छोटा ही सही इसमें जहाँ रखता हूँ।।
तू बता क्या तेरी कोठी में है दौलत ऐसी।
मुस्कुराती हुई घर में जो मैं माँ रखता हूँ।।

(90)

अब्र चलते हैं मेरे साथ घटाएँ ले कर।।
सर पे चादर लिये चलती है हवाएँ लेकर।।
हादसे सरको झुका कर के निकल जाते हैं।
घर से चलता हूँ मैं जब माँ की दुआएँ ले कर।।

(91)

बिना दस्तार सुल्ताँ का तो सर अच्छा नहीं लगा।।
न हो परवाज़ बाजू में तो पर अच्छा नहीं लगता।।
अज़ीज़ों से भरे घर में भी सन्नाटा सा लगता है।
के जब माँ घर से बाहर हो तो घर अच्छा नहीं लगता।।

(92)

तेरे चहरे पे अमावस का अंधेरा होता।।
देखाता कौन बलाओं का जो डेरा होता।।
ये सितारे भी न तेरा यूँ लगाते चक्कर।
तुझ में ए चाँद मेरी माँ का न चहरा होता।।

(93)

बड़ा मुझसे ज़माने में कोई दूजा नहीं होगा।।
तेरे क़दमों से लेकिन सर मेरा ऊँचा नहीं होगा।।
दुआएँ जब तलक सर पर मिरे तेरी रहेंगी माँ।
किसी के सामने सर ये कभी नीचा नहीं होगा।।

(94)

अकेले वो बीमारी से कभी लड़ने नहीं देती।।
सरहाने से मुझे पानी तलक भरने नहीं देती।।
हमेशा लेट जाती है वो मेरी मौत के आगे।
ज़ईफ़ी में भी माँ मुझको अभी मरने नहीं देती।।

(95)

ख़ुदा के सामने मेरी भलाई पर अड़ी होगी।।
वज़ू आँसू से कर सजदे में मेरी माँ पड़ी होगी।।
बलाएँ रास्ते में गर मेरी आएँ तो ग़म क्या है।
हिफ़ाज़त में दुआ माँ की मेरे सर पे खड़ी होगी।।

(96)

उसकी आँखों से सितारों में दमक आई है।।
उसके हाथों ही से चुड़ी में खनक आई है।।
उसके क़दमों से ही घरती को मिली ही रौनक़।
चाँद में माँ मेरी बैठी तो चमक आई है।।

(97)

सोई हुई क़िस्मत को यूँ बेदार करोगे।।
उठते ही सुबह माँ का जो दीदार करोगे।।
हर एक क़दम पाओगे ख़ुशियों के ख़ज़ाने।
ख़ुश होगा ख़ुदा माँ से अगर प्यार करोगे।।

(98)

सदमें नहीं सदमों का असर तक नहीं देता।।
मैं माँ को कभी टेड़ी नज़र तक नहीं देता।।
बस्ती में अगर मौत भी हो जाए किसी की।
भूले से भी माँ को मैं ख़बर तक नहीं देता।।

(99)

मुझे रंजो अलम कितना भी हो माँ से छुपाता हूँ।।
बोहत शादाब ख़ुश हूँ हमेशा ये दिखाता हूँ।।
मेरे चहरे को पढ़ कर माँ न यूँ मायूस हो जाए।
मैं उसके सामने जाने से पहले मुस्कुराता हूँ।।

(100)

तुझे जब याद अपनी ज़िन्दगी आबाद आएगी।।
कभी शिकवा लबों पर तो कभी फ़रियाद आएगी।।
अभी है साथ ये तेरे बिठाले आज पलकों पे।
नहीं होगी जो माँ घर में बहुत ही याद आएगी।।

(101)

काँटों पे कैसे चलते हैं चलना सिखा दिया।।
फ़ाक़ों से उसने हमको जो लड़ना सिखा दिया।।
मुश्किल भी हमसे हार के वापस चली गई।
माँ ने सम्भल के हमको जो चलना सिखा दिया।।

(102)

उतरते मैंने आँगन में कई महताब देखे थे।।
सितारे मुझसे मिलने को कई बेताब देखे थे।।
बुढ़ापे में सही लेकिन सभी वो हो गये पूरे।
जो माँ की गोद में सो कर के मैंने ख़्वाब देखे थे।।

(103)

मुझे टी.वी. से फ़िल्मों से हमेशावो बचाती है।।
वो परियों की कहानी है जो रातों को सुनाती है।।
कोई बेटा शहर से गाँव में वापस नहीं आया।
इसी डर से न माँ मुझको सड़क पक्की दिखाती है।।

(104)

धबरा के ज़िन्दगी भी जो नाकाम आ गई।।
लेकर के मौत मेरा ये पैग़ाम आ गई।।
लेने को जान सर पे क़ज़ा आ गई मगर।
माँ की दुआएँ थी जो मेरे काम आ गई।।

(105)

वो माँ की गोद में छोटा-सा ललना याद आता है।।
था कच्चे घर में चादर का वो पलना याद आता है।।
दग़ा कब उम्र ने दे दी थमा दी हाथ में लकड़ी।
मगर ऊँगली पकड़ कर माँ की चलना याद आता है।।

(106)

सीधा-सा रास्ता मुझे उसने चलाया था।।
मुश्किल कहाँ-कहाँ पे है ये सब बताया था।।
वक़्ते नज़अ़ भी मेरी जुबाँ से निकल पढ़ा।
तुतली जुबाँ को माँ ने जो कलमा रटाया था।।

(107)

बड़ा कर जो ज़माने में ये कारोबार बैठे हैं।।
लिये डॉलर कहीं बैठे कहीं दीनार बैठे हैं।।
ज़माने की है दौलत पर उन्हें इक माँ नहीं मिलती।।
वतन से दूर जा कर जो समुन्दर पार बैठे हैं।।

(108)

वो बूढ़ी हो गई लेकिन अभी आदत नहीं जाती।।
बचाती है वो पैसा और नई चादर नहीं लाती।।
मैं घर जब तक नहीं जाता हूँ माँ रोज़े से रहती है।
कि जब तक मैं नहीं खाता हूँ मेरी माँ नहीं खाती।।

(109)

वोह मेर खाब में आया उसे देखा मज़े में है।।
कमाया है वहाँ जा कर बहुत पैसा मज़े में है।।
मुझे रोटी नहीं मिलती कोई परवह नहीं इसकी।
खुशी इस बात की है बस मेरा बेटा मज़े में है।।

(110)

ख़ाली पड़ा है जिस्म मेरा जाँ चली गई।।
जिसने बसाए दिल में थे अरमाँ चली गई।।
वो तो बना के लाई थी बेटी इसे मगर।
आई बहू जो घर में तो फिर माँ चली गई।।

(111)

वही तो जिस्म है मेरा वही तो जाँ–सी लगती है।।
वो जो सौ–बार ना बोले मगर वो हाँ–सी लगती है।।
मुझे रिश्तों के खानों में उसे रखना नहीं आता।
सभी कहते हैं मौसी पर मुझे वो माँ–सी लगती है।।

(112)

खुदा की बारगह से भी कभी ख़ाली नही जाती।।
दुआ माँ की दुआ है वो कभी टाली नहीं जाती।।
ये छोटे थे इन्हें माँ ने बड़े नाज़ों से पाला था।
बड़े बदबख़्त हैं बेटे कि माँ पाली नहीं जाती।।

(113)

खुदा की उम्र भर उन पर यूँ ही लानत बरसती है।।
अन्धेरी क़ब्र में जैसे बदो की रुह तड़पती है।।
ज़माना ऐसे बेटों के लिये धुत्कार करता है।
किसी बेटे की दर–दर जब कभी भी माँ भटकती है।।

(114)

ख़िदमत तो करो माँ की क़िस्मत भी खरी होगी।।
हर वक़्त दुआओं से रहमत की झड़ी होगी।।
देखो तो सही माँ के क़दमों की जमीं छू कर।
दुनिया ही नहीं उसमें जन्नत भी पड़ी होगी।।

(115)

कलाई करते करते ही वो पेन्दा झाल देती है।।
बुराई कोई करता है तो हँस के टाल देती है।।
मेरे ऐबों को माँ मेरी कभी दिखने नहीं देती।
गुनाहों पर मेरे अकसर वो पर्दा डाल देती है।।

(116)

हवा की दोस पे यारो चरागाँ करने वाला हूँ।।
मैं ऊँचा फिर ज़माने में गिरेबाँ करने वाला हूँ।।
कोई बिजली नशेमन पर मेरे आती है आजाए।
दुआओं को मैं माँ की अब निगहेबाँ करने वाला हूँ।।

(117)

तुझको खोजा मैंने पथ–पथ तू कहाँ आ कर मिला।।
मैंने जब अन्तर निहारा तू मेरे भीतर मिला।।
ठोकरों पर ठोकरें खाता रहा जग में ''फ़राज़''।
माँ के चरणों में झुका सिर तो उसे अम्बर मिला।।

(118)

घर में सिलाई कर के मुझे पालती रही।।
आँखों से रोज़ क़द वो मेरा नापती रही।।
मै सो गया के मेरी तबीयत ख़राब थी।
लेकिन सरहाने बैठ के माँ जागती राही।।

(119)

मुझको पलकों पे मेरी माँ ने बिठा रख्खा है।।
कब से आँखों में मुझे इस ने सजा रख्खा है।।
उसके ख़ाबों में रहा करता हूँ जुगनू की तरह।
रात दिन माँ ने ख़ायालों में बसा रख्खा है।।

(120)

मुझे देखेगी राहों में बला भी भाग जाएगी।।
मुसीबत राह से सौ–सौ दफ़ा भी भाग जाएगी।।
हज़ारों आँधियाँ आए हज़ारों ज़ल–ज़ले लेकिन।
दुआ माँ की जो देखेगी क़ज़ा भी भाग जाएगी।।

(121)

धूप सर पे आई तो वो छाँव बन गई।।
सर पे पानी जब चड़ा तो नाव बन गई।।
आ गई है मुश्किलों से लड़ने फिर से माँ।
चलते चलते थक गया तो पाँव बन गई।।

(122)

आई नज़र न उस–सी तो मूरत कहीं मुझे।।
भाती नहीं हैं कोई भी सूरत नई मुझे।।
आता है माँ के चहरे में सब कुछ नज़र तो फिर।
पढ़ गई है आईने की ज़रुरत कहीं मुझे।।

(123)

तेरे गुलशन में जो गुलेतर हैं।।
मेरे आँगन में उससे बेहतर हैं।।
इत्र सँदल की फिर ज़रूरत क्या।
पाँव माँ के मेरे मोअत्तर हैं।।

(124)

शिकम में रख के एक माँ ने लहू हमको पिलाया है।।
हुए पैदा तो गोदी में हमे उसने खिलाया है।।
जो निकली रुह तो दूजी ने अपनी चीर कर छाती।
हमे आग़ोश में ले कर क़यामत तक सुलाया है।।

(125)

ज़िन्दगी बे हादसा निकल गई।।
सर झुका के हर बला निकल गई।।
मुश्किलों ने आगे चल के राह दी।
माँ के मुँह से जब दुआ निकल गई।।

(126)

दिल से कभी भी माँ की मोहब्बत नहीं गई।।
दोनों जहाँ की हाथ से दौलत नहीं गई।।
दे दी दुआ जो मुझको तो फिर मौत मर गई।
होंठों से मेरी माँ के करामत नहीं गई।।

(127)

चवदवीं रात में जैसे कि चन्दा मुस्कुराता है।।
मेरे आँगन में मेरी माँ का चहरा जगमगाता है।।
उदासी देख कर माँ की सभी ग़मगीन होते हैं।
अगर हँसती है माँ घर में तो घर भर गुनगुनाता है।।

(128)

माँ के आँचल की बदौलत है उजाला घर में।।
माँ के दीदार से होता है सवेरा घर में।।
माँ की आवाज़ है कानों में तबर्रुक सबके।
घर की जागीर है माँ तेरा बिछौना घर में।।

(129)

सुकूँ मिलता जो ज़हरे ग़म निगल जाता तो अच्छा था।।
यूँ ही काँटे से काँटा गर निकल जाता तो अच्छा था।।
न मंज़िल से गिरा होता न मकसद से हटा होता।
नसीहत सुन के माँ तेरी सम्भल जाता तो अच्छा था।।

(130)

कोई साया है न राहों में शजर लगता है।।
राह पत्थरीली है काँटों का सफ़र लगता है।।
हादसे आ के मेरी राह में मर जाते हैं।
ये मेरी माँ की दुआओं का असर लगता है।।

(131)

अदा क़ीमत नहीं होती खिलौना टूट जाता है।।
करूँ तारीफ़ बेटी की तो बेटा रुठ जाता है।।
भरे घर में भी माँ तेरी कमी महसूस होती है।
तेरी जब याद आती है समुन्दर फूट जाता है।।

(132)

मुझको दरकार है हर वक़्त ज़रुरत माँ की।।
काम आई है ज़माने में नसीहत माँ की।।
ढ़ाल बन कर जो यहाँ मेरी हिफ़ाज़त की है।
लेके जन्नत में भी जाएगी मोहब्बत माँ की।।

(133)

दौलत को पाने वाले भी कैसे अजीब हैं।।
एक दिन समझ में आएगा कितने ग़रीब हैं।।
पा कर जहान आज भी राहत नहीं मिली।
जो माँ को पा गए हैं वही ख़ुश नसीब हैं।।

(134)

वो जो मुझको ख़याल देती है।।
उनको शैरों को मैं ढाल देती है।।
माँ के होंठों की एक हँसी मुझको।
मुश्किलों से निकाल देती है।।

(135)

माँगी जो मैंने रोटी तो पानी पिला दिया।।
माँ ने मुझे यूँ भूक से लड़ना सिखा दिया।।
सिसकी न जाने कब मेरी मुस्कान बन गई।
भूले से माँ ने जब कभी चूल्हा जला दिया।।

(136)

मुश्किलों से मैं लड़ा के आँख फिर गुज़र गया।।
पास अपने अज़्म से मैं इम्तेहान कर गया।।
माँ के पाँव चूम कर जब भी घर से मैं चला।
था जहाँ पे डर मुझे वो रास्ता संवर गया।।

(137)

बड़ी जद्दो जहद से ये तुम्हारे साथ आई है।।
हमें तो ग़ैर कहती है कहाँ ये पास आई है।।
मुबारक हो अगर जो ये तुम्हें बेटा समझती है।।
हमें सौतेली माँ लेकिन कभी न रास आई है।।

(138)

जो हरे थे फल सारे वो पीले हुए।।
जो भी बेरंग थे सब रंगीले हुए।।
आम कच्चे ही आए थे घर में मगर।
हाथ माँ के लगे सब रसीले हुए।।

(139)

कहीं तो सुबह लगती है कहीं वो शाम लगती है।।
सफ़र से जब भी आता हूँ वही आराम लगती है।।
ये क़िस्मत की बलन्दी है कि माँ के साथ रहता हूँ।
बूढ़ा पे में खुदा का माँ मुझे ईनआम लगती है।।

(140)

अगर हो धूप सर पर तो वो साएबान बनती है।।
परेशानी में वो मेरी सुकूँ–ने जान बनती है।।
इबादत में रियाज़त में हमेशा साथ रहती है।
तिलावत जब मैं करता हूँ तो माँ कुरआन बनती है।।

(141)

खुशी ने मेरे आँगन से कभी मुँह को नहीं मोड़ा।।
खुशी को देख कर ग़म ने कभी रिश्ता नहीं जोड़ा।।
अकेला गर मैं मिलता तो सताते ग़म मुझे लेकिन।
मेरी माँ ने तो घर में भी मुझे तन्हा नहीं छोड़ा।।

(142)

जुल्म क़िस्मत जो कभी सर पे मेरे ढ़ा जाती है।।
ग़म की बदली जो कभी सरपे मेरे छा जाती है।।
अश्क भूले से भी आँखों में जो आते हैं कभी।
माँ तसल्ली भरा आँचल लिए आ जाती है।।

(143)

उसको मिला नसीब तो लाचार ही मिला।।
जब–जब मिला है रास्ता दुश्वार ही मिला।।
घर में रखा था जो भी वो मुझको खिला दिया।
सहरी मिली है माँ को न अ़तार ही मिला।।

(144)

दुश्मनों को मुआफ़ करता हूँ।।
अपने दिल को यूँ साफ़ करता हूँ।।
जब इबादत का सोचता हूँ कभी।
घर में माँ का तवाफ़ करता हूँ।।

(145)

ज़िन्दगी तूने मुझे जब भी सफ़र में रख्खा।।
लाख फूलों से भरी रहगुज़र में रख्खा।।
तेरी फ़ितरत से वो वाक़िफ़ थी ज़माने की तरह।
इसलिये माँ ने मेरी मुझको नज़र में रख्खा।।

(146)

माँ जैसा इनआम नहीं है।।
माँ के बिन आराम नहीं है।।
दोनों जहाँ में जा कर ढुँढ़ो।
माँ जैसा तो नाम नहीं है।।

(147)

माँ जो नहीं तो राम नहीं है।।
माँ के बिन धनश्याम नहीं है।।
चाहे जितने तिरथ कर लो।
माँ जैसा तो धाम नही है।।

(148)

गॉड ख़ुदा भगवान से पूछो।।
पोथी और पोराण से पूछो।।
माँ की महिमा गीता में है।
माँ क्या है क़ुरआन से पूछो।।

(149)

एक अंगूठी में नगीने–सा जड़ा रहने दो।।
ये घना पेड़ है आँगन में खड़ा रहने दो।।
धूप निकलेगी तो बच्चों को बचायेगा यही।
माँ के आँचल की तरह सर पे पड़ा रहने दो।।

(150)

यूँ तो आए हैं ज़माने की निज़ामत लेकर।।
कोई हम–सा नहीं आया है इमामत लेकर।।
माँ की मर्ज़ी के बिना घर से न जाते हैं मगर।
घर में आते भी हैं फिर माँ की इजाज़त लेकर।।

(151)

चले जाने की रट है और मुस–लसल ज़िद पे उतरा है।।
परेशानी में हैं सारे कि नादानी में शिजरा है।।
बग़ावत पर उतर आया बहु के घर में आने से।
मगर माँ सबको कहती है कि घर में एक कमरा है।।

(152)

लड़–खड़ाता हूँ तो मिलता है सहारा मुझको।।
आ के मझधार में देती है किनारा मुझको।।
थक चुका है जो अगर तू तो चला आ बेटे।
माँ ने ख़ाबों में भी आ आ के पुकारा मुझको।।

(153)

दीपों से मेरी रात उजाली नहीं हुई।।
झोली मेरी दुखों से तो ख़ाली नहीं हुई।।
यूँ तो तमाम लोग थे घर में मेरे मगर।
माँ के बग़ैर फिर भी दीवाली नहीं हुई।।

(154)

राहों में अपने बेटे की पलकें बिछाऊँगी।।
माथे पे उसके आते ही चन्दन लगाऊँगी।।
दिल के दीए जला के यूँ बैठी थी रात भर।
बेटे के साथ घर में दीवाली मनाऊँगी।।

(155)

शौहरत के पीछे झूठी क़यादत में लग गया।।
कुर्सी मिली तो उसकी हिफ़ाज़त में लग गया।।
दीपक जला के बैठी दीवाली की रात भर।
बैटा भूला के माँ को सियासत में लग गया।।

(156)

सुबह करते हैं शाम करते हैं।।
हाथ बान्धे कलाम करते हैं।।
सर झुकाते हैं माँ के क़दमों में।
चाँद सूरज सलाम करते हैं।।

(157)

जागी है रात-रात वो हमको सुलाया है।।
बिस्तर हमारा रात को उसने सुखाया है।।
एहसान माँ का कैसे उतारेंगे सर से हम।
ख़ूने जिगर का दूध जो हमको पिलाया है।।

(158)

गर्दीश ने राह फिर मुझे गर्दन झुका के दी।।
हर मंज़िल मुराद भी क़दमों में ला के दी।।
जो मुशकिलें थी सब मेरी आसाँ हुई मेरी।
माँ ने दुआ जो मुझको मुसल्ला बिछा के दी।।

(159)

हमको नहीं है ख़ौफ़ मुख़ालिफ़ हवाएँ हैं।।
हर एक क़दम पे माना कि बैठी बलाएँ हैं।।
कश्ती लगेगी पार थपेड़े लगाएँगे।
तूफ़ाँ का ग़म किसे है जो माँ की दुआएँ है।।

(160)

राह तूफ़ान ख़ुद बदलते हैं।।
तेज़ आँधी में दीप जलते हैं।।
जब से माँ ने दुआएँ भेजी हैं।
हादसे घर से कम निकलते हैं।।

(161)

ग़मके सहराओं से कब ख़ौफ़ लगा है मुझको।।
अपनी आँखों के समुन्दर को भी पी जाता हूँ।।
लाख रहता हूँ मैं दिन भर किसी मूर्दे जैसा।
माँ जो सीने से लगाती है तो जी जाता हूँ।।

(162)

बाद मुद्दत के जो परदेस से घर जाएँगे।।
ख़ाली दामन जो मुरादों से हैं भर जाएँगे।।
ज़ब्त हमसे भी ख़ुशी होगी न अपनी या-रब।
माँ जो सीने से लगाएगी तो मर जाएँगे

(163)

उसके आगे जो अदब से मैं खड़ा रहता हूँ।।
फिर अंगूठी में नगीने-सा जड़ा रहता हूँ।।
मुझको आता है हर एक पल यूँ मज़ा जन्नत का।
माँ की आग़ोश में जिस वक़्त पड़ा रहता हूँ।।

(164)

ख़ुश्बू ही ख़ुश्बू बिखरी है दिल के गुलाब में।।
खुशियाँ तमाम आ गईं मेरे हिसाब में।।
मुझको अगर जो पढ़ना हो आसा़न है बहुत।
चहरा किताब माँ का हैं मैं हूँ किताब में।।

(165)

ख़ातूने दो जहान की कुर्बत नसीब कर ।।
हर लम्हा क़ब्र में उन्हें राहत नसीब कर ।।
अपने करम से बख़्श दे उप के हर इक गुनाह।
अल्लाह मेरी माँ को तू जन्नत नसीब कर।।

(166)

खुदा की ज़ात से मुझ पर इनआमों पर इनआम आए।।
हज़ारों लोग मुस्काए हज़ारों के कलाम आए।।
मैं तन्हा जब भी गुज़रा हूँ नहीं देखा किसी ने पर।
जो माँ के साथ निकला तो सलामों पर सलाम आए।।

(167)

अल्लाह का है शुक्र निगहेबाँ के साथ हूँ।।
घर भर की जान जो है उसी जाँ के साथ हूँ।।
तुमको अगर है नाज़ तो दौलत पे तुम करो।
मुझको है फ़ख़्र ये कि मेरी माँ के साथ हूँ।।

(168)

वही तो दिल है मेरा और वही तो जान लगती है।।
मैं पढ़ता हूँ उसे जब भी मुझे कुरआन लगती है।।
अगर माँ मुस्कुराती है कभी जब सामने आ कर।
बड़ी से भी बड़ी मुश्किल मुझे आसान लगती है।।

(169)

जो आँधी सामने होती तो मैं तूफ़ान हो जाता ।।
सितमगर आ के क़दमों पे मेरे कुरबान हो जाता ।।
हज़ारों मुश्किलों पर मैं अकेला हूँ बहुत लेकिन।
अगर माँ साथ होती तो सफ़र आसान हो जाता ।।

(170)

है तकब्बूर जो तुझे ख़ुद पे तो इतना सुनले।
हाथ धो बैठेगा ए चाँद तू अपनी जाँ से।।
तू हसीं लाख हो मेहबूब से माना लेकिन।
तुझमें हिम्मत है तो आ आँख मिलाले माँ से।।

(171)

जब कभी माँ की मैं ख़िदमत में रहा करता हूँ।।
ये करम होता है रहमत में रहा करता हूँ।।
दूर रहते हैं ज़माने के मसाईल मुझसे।
ऐसा लगता है कि जन्नत में रहा करता हूँ।।

(172)

सुकूने दिल नहीं होगा जहाँ में जब तुम्हें हासिल।
कभी शिकवा लबों पर तो कभी फरियाद आएगी।।
मुसीबत में खड़े होंगे सभी यूँ साथ में लेकिन।
अगर जो माँ नहीं होगी बहुत फिर याद आएगी।।

(173)

दरबदर यूँ न भटकता न परेशाँ होता।।
मेरी खुशियों का हर एक शख़्स निगेहबाँ होता।।
बाद मुद्दत के ये समझा हूँ कि ए माँ तेरी।
सर पे जूती जो उठा लेता तो सुल्ताँ होता।।

(174)

जो मुझको मिला है खुदारा बहुत है।।
जहाँ पर हूँ मेरा गुज़ारा बहुत है।।
मुझे घर में ईल्मो अदब हैं सिखाए।
मेरी माँ ने मुझको संवारा बहुत है।।

(175)

सदा जब वो लगाएगी तो पत्थर को जगा देगी।।
नजर भर के जो देखेगी तो बिजली–सी गिरा देगी।।
परेशाँ हाल हूँ लेकिन नहीं मायूस हूँ अब भी।
अंधेरे फाख़्ता होंगे अगर माँ मुस्कुरा देगी।।

(176)

बन के रहता है हर एक शख़्स किनारा घर में।।
पूर सुकूँ रहता है हर वक़्त नज़ारा घर में।।
लाख मुश्किल भी जो आती है तो टल जाती है।
माँ जो रहती है तो रहता है सहारा घर में।।

(177)

वो बादल बन के आता है हमेशा साथ रहता है।।
अजब रिश्ता निभाता है हमेशा साथ रहता है।।
उजाला या अँधेरा या मुसीबत की घड़ी कोई।
मेरी माँ का जो साया है हमेशा साथ रहता है।।

(178)

दुनिया में उसे सबसे सिवा देख रहा हूँ।।
वैसे तो ख़ुदा से मैं जुदा देख रहा हूँ।।
कैसा है ख़ुदा मैंने भी देखा तो नहीं पर ।
हाँ माँ की मोहब्बत में ख़ुदा देख रहा हूँ।।

(179)

माँ ही तो पीर है मेरी माँ ही इमाम हैं।।
माँ का कलाम ही तो ख़ुदा का कलाम है।।
परवह किसे फ़राज़ है रंजो अलम की फिर।
माँ साथ है तो मुझ पर हर इक ग़म हराम है।।

(180)

मौक़ा हर एक शख़्स को देती है हर घड़ी।।
नेकी के बदले ले लो ये कहती है हर घड़ी।।
जिसने दबाए पाँव समझ लो ख़रीद ली।
जन्नत जो माँ के क़दमों में रहती है हर घड़ी।।

(181)

ख़फ़ा थोड़ी भी होती है मज़ा कुछ और होता है।।
ख़बर जब भी वो लेती है मज़ा कुछ और होता है।।
हो फ़ाक़ों पर जो फ़ाक़े तो नहीं परवह हमें लेकिन।
अगर माँ साथ रहती है मज़ा कुछ और होता है।।

(182)

जहाँ मुजरिम बना मैं तो वक़ालत मेरी करती है।।
ख़ताओं पर नहीं जाती हिमायत मेरी करती है ।।
बुढ़ापा आ गया माँ को कमर तक झुक गई लेकिन।
जवाँ बन कर मुसीबत में हिफ़ाज़त मेरी करती है।।

(183)

ज़मीं तो मुस्कुराती है फ़लक भी जग–मागाता है।।
अँधेरा दूर होता है मुक़द्दर झिल–मिलाता है।।
मिलेगी हश्र में बेहतर जज़ा इसकी यहाँ लेकिन।
क़दम माँ के पकड़ता हूँ ख़ुदा रहमत लुटाता है।।

(184)

हर एक शय तो ये कहती है कि हाँ जी हाँ नहीं होती।।
कोई सूरत नहीं होती कोई भी जाँ नहीं होती।।
किसी का और क्या कहना फ़क़त इतना ही काफ़ी है।
जहाँ में हम नहीं होते अगर जो माँ नहीं होती।।

(185)

जहाँ से मैं चला था फिर मुझे वापस वहाँ कर दे।।
ज़रूरत को घटा दे फिर तू छोटा–सा जहाँ कर दे।।
बिछड़ कर माँ से मैं या–रब परशाँ हाल रहता हूँ।
मुझे बच्चा बनादे और मेरी माँ को जवाँ कर दे।।

(186)

मुश्किल था जो सफ़र उसे आसाँ बना दिया।।
तहज़ीब मुझको बख़्शी है इन्साँ बना दिया।।
मक़बूल कर दिया मुझे सारे जहान में।
माँ ने मुझे फ़क़ीर से सुल्ताँ बना दिया।।

(187)

हर एक त्यौहार घर करते न यूँ परदेस जाते तुम ।।
क़दम छूते बुज़ुर्गों के तो आशीर्वाद पाते तुम ।।
ये दौलत की हवस तुमको वतन से दूर ले आई ।।
मोहब्बत माँ से होती तो दिवाली घर मनाते तुम ।।

(188)

बैठा जो उसके साथ तो रहमत में आ गया।।
खाया जो उसके साथ वो नेअमत में आ गया।।
आमाल मेरे ऐसे तो हरगिज़ न थे मगर।
माँ के दबा के पाँव तो जन्नत में आ गया।।

(189)

उसकी दुआ ने मुझको गुलेतर बना दिया।।

ख़िदमत के बदले मेरा मुक़द्दर बना दिया।।

दुनिया की फ़िक्र मुझको न उक़्बा का ग़म रहा।

माँ की नज़र ने जब से क़लन्दर बना दिया।।

(190)

वही तो जिस्म है अपना वही तो जान लगती है।।

वही पहचान है घर की उसीसे शान लगती है।।

रेआया बन के सब उसकी हमेशा साथ रहते है।

वो बैठी हो के लेटी हो मगर सुल्तान लगती है।।

(191)

मैं झूठा हूँ बहुत लेकिन मुझे सच्चा समझती है।।

मेरा किरदार मैला है उसे उजला समझती है।।

गुनाहों का पुलन्दा है मेरे क़ल्बो जिगर लेकिन।

मेरी माँ कितनी भोली है मुझे बच्चा समझती है।।

(192)

वो बुढ़ी हो गई लेकिन हुकुमत अब भी चलती है।

कोई पत्ता नहीं हिलता जो उसकी हाँ नहीं होती।।

खुशी का कोई मौक़ा हो के शादी हो कोई घर में।

कोई रौनक़ नहीं होती जो घर में माँ नहीं होती।।

(193)

माँ साथ है अगर तो ये रब का इनआम है।।

जन्नत-नुमा है घर भी जो माँ का क़याम है।।

नेअमत हज़ार घर में हो लानत है दोस्तो।

माँ के बग़ैर हमको निवाला हराम है।।

(194)

हर मौज उसको देख के धारे पे आ गई।।

जैसे कोई कनीज़ इशारे पे आ गई।।

तूफ़ाँ निगल रहा था कि माँ की दुआ से फिर।

कश्ती उछल के मेरी किनारे पे आ गई।।

(195)

सरको झुकाए जान का दुश्मन निकल गया।।

आया जो हादसा वही रहमत में ढ़ल गया।।

क़दमों को माँ के चुमके निकला सफ़र को जब।

कश्ती को मेरी देख के तूफ़ान टल गया।।

(196)

बेफ़िक्र मैं हुआ था यूँ लंगर निकाल कर।।

ढ़ेरों दुआएँ बैठी हैं उसको सम्भाल कर।।

तूफ़ान मेरी कश्ती निगल तो गया मगर।

माँ ने निकाला मुझको समुन्दर खंगाल कर।।

(197)

ठंडी–ठंडी हवाएँ रखता हूँ।।
खुशनुमा मैं फ़िज़ाएँ रखता हूँ।।
धूप क़दमों में मेरे बिछती है।
सर पे माँ की दुआएँ रखता हूँ।।

(198)

वो मेरे सामने हँसती है अपना ग़म छुपाती है।।
अंधेरे में सुलाती है हसीं सपने दिखाती है।।
वो मेरी माँ है मेरे बिन निवाला तक नहीं लेती।
अगर खाना हो उसको तो मुझे पहले खिलाती है।।

(199)

क़दम माँ के जहाँ पर है उसीके नीचे जन्नत है।।
जो साया सर पे है माँ का तो समझो तुम पे रहमत है।।
हज़ारों लज़्ज़तें हों तो कोई माअने नहीं रखती।
अगर माँ हाथ से चटनी खिला दे तो वो नेअमत है।।

(200)

सर पर जो लेके धूप मैं घर से निकल गया।।
सूरज को क्या हुआ है दोपहरी में ढ़ल गया।।
कानों में आ के कह गई ठंड़ी हवा मुझे।
माँ ने दुआएँ भेजी हैं मौसम बदल गया।।

(201)

वो जब दुआ किसी को देती है बिगड़ी क़िस्मत सँवार देती है।।
एक खुशी क्या है ज़िन्दगी अपनी, अपने बच्चों पे वार देती है।।
शाम को जब भी बेटा आता है बोझ लेकर जो ज़िम्मेदारी का।
माँ फिरा कर के हाथ फिर सर पर उसका बोझा उतार देती है।।

(202)

बे–वजह वो जुदा नहीं करती जितना मुमकिन हो साथ रखती है।।
मैं कमाने जो घर से जाता हूँ याद मेरी वो पास रखती है।।
वो खुशी से महक–सी जाती है लोट कर जब मैं घर में आता हूँ।
फिर लगा कर के मुझको सीने से माँ मेरे सर पे हाथ रखती है।।

(203)

हो फूल भरी राह गुज़र कैसा लगेगा।।
हर सिम्त हो ख़ूश्बू सफ़र कैसा लगेगा।।
बीबी भी हो बच्चे भी हों सब साथ हों लेकिन।
एक माँ ही न हो साथ सफ़र कैसा लगेगा।।

(204)

कभी सोती नहीं है वो मुझे पहले सुलाती है।।
मुझे वो जागता देखे उसे कब नींद आती है।।
जो सोता देख कर मुझको कभी वो सो भी जाती है।
मगर हरवट बदलता हूँ तो माँ फिर जाग जाती है।।

(205)

काश वही दिन फिर से आए।।
माँ का बिस्तर माँ ही सुलाए।।
देर तलक जब मैं न जागूँ।
चुटकी भर कर माँ ही जगाए।।

(206)

किसी सितम से न ज़ोरो जफ़ा से आया हूँ।।
न ईल्मो फ़न से न अपनी अदा से आया हूँ।।
बलन्दी ख़ुद मुझे लेने को घर पे आई थी।
मैं इस मक़ाम पे माँ की दुआ से आया हूँ।।

(207)

तू ही सच्चा बना दे फिर कि जैसा माँ समझती है।।
तू ही अच्छा बना दे फिर कि जैसा माँ समझती है।।
वो जैसा मुझको चाहती है मैं वैसा हो नहीं सकता।
तू ही बच्चा बना दे फिर कि जैसा माँ समझती है।।

(208)

इज़्ज़त भी मिलेगी तुम्हें दौलत भी मिलेगी।।
पाओगे बलन्दी तुम्हें शोहरत भी मिलेगी।।
दुनिया की तुम्हें फ़िक्र न उक़्बा को कोई ग़म।
माँ खुश है अगर तुम से तो जन्नत भी मिलेगी।।

(209)

हर शय में उसकी याद सताती है अब हमें।।
वो ही अज़ाँ में आ के जगाती है अब हमें।।
हर बात पे सवाल था चिड़ते थे हम कभी।
माँ की वो छेड़खानी रुलाती है अब हमें।।

(210)

मिली जो हश्र में माँ तो वो सीने से लगा लेगी।।
खुशी से फिर वहीं वो आसमाँ सर पर उठा लेगी।।
फ़रिश्ते जिस घड़ी लेकर मुझे जाएंगे दोज़ख़ में।
यक़ी है माँ मिरी मुझको वहाँ पर भी बचा लेगी।।

(211)

छाया हुआ था सर पे जो बादल निकल गया।।
मौसम ज़रा-सी देर में कितना बदल गया।।
क़दमों को माँ के चूम के निकला सफ़र को जब।
कश्ती को मेरी देख के तूफ़ान टल गया।।

(212)

कभी इसकी कभी उसकी वो सभी की ख़ातिर।।
मुस्कुराती रही माँ मेरी हँसी की ख़ातिर।।
दिल में आँसू का समन्दर था लबालब लेकिन।
खुदको कुरबान किया घर की खुशी की ख़ातिर।।

(213)

मेरी बला से गर जो ज़माना ख़िलाफ़ है।।
मुझको नहीं है डर जो ज़माना ख़िलाफ़ है।।
मुझको तो मेरी माँ की रज़ा देखनी है बस।
ले जाए मेरा सर जो ज़माना ख़िलाफ़ है।।

(214)

पढ़े लाखों किताबें पर हिदायत मिल नहीं सकती।।
बुजुर्गों की कभी उनको इनायत मिल नहीं सकती।।
इबादत करते करते लाख सजदे में वो मर जाएँ।
अगर नाराज़ है माँ तो विलायत मिल नहीं सकती।।

(215)

सोचता हूँ तो ख़यालों में उतर जाती है।।
दिल के गुलशन में वो तितली-सी संवर जाती है।।
आईना जब भी कभी सामने आता है मिरे।
माँ की तस्वीर निगाहों में उभर जाती है।।

(216)

रहो तुम माँ की आँखों में हमेशा रोशनी बन कर।।
तुम्हें माँ ने सँवारा है तुम्हारी ज़िन्दगी बन कर।।
तुम्हारी माँ की चादर ही इमामत का मुसल्ला है।
ज़माना है खड़ा देखो तुम्हारा मुक्तदी बन कर।।

(217)

ग़म नहीं मुझको जो रहता नहीं पैसा घर में।।
माँ जो रहती है तो रहता है भरोसा घर में।।
दूर करती है थकन पल में जमाने भर की।
मेरे माथे का जो लेती है वो बोसा घर में।।

218)

याद आई वो मुक़द्दर मेरा बदला जब भी।।
उसने बड़ कर है सम्भाला मुझे फिसला जब भी।।
मर गई राह में आ कर के बलाएँ सारी।
चूम कर माँ के क़दम घर से मैं निकला जब भी।।

(219)

मुझे तो माँ से बड़कर फिर कोई दौलत नहीं लगती।।
अगर माँ घर नहीं हो तो कोई क़ीमत नहीं लगती।।
मेरी चाहत भी है घर से निकल कर देख लूँ दुनिया।
मगर बीमार हो माँ तो कहीं तबियत नहीं लगती।।

(220)

गर्मिए ग़म से जो घबराया हवाएँ दी हैं।।
मुझको माँ ने मेरी शक़्त की निदाएँ दी हैं।।
मेरे सर पर हैं गिरे अब्रे करम के छींटे।
जब भी रो-रो के मुझे माँ ने दुआएँ दी हैं।।

वालिद

(1)

अपने बच्चों पे हमेशा जो फ़िदा दिखता है।।
सारी दुनिया में वो सबसे ही जुदा दिखता है।।
अपने बारे में वो सोचे उसे फुरसत ही नहीं।
बाप कहते हैं जिसे उसमें ख़ुदा दिखता है।।

(2)

आईने में जो कभी ख़ुदको सरापा देखा।।
सूखी शाख़ों पे भी पत्तों का लिबादा देखा।।
उसको बच्चों की ज़रुरत ने जवाँ रख्खा है।
वरना चहरे पे ज़माने ने बुढ़ापा देखा।।

(3)

किसी भी हाल में नीचा कभी परचम नहीं करता।।
किसी के सामने सर को मैं अपने ख़म नहीं करता।।
खुदा ने रख दिया सर पर मेरे वालिद के साए को ।
मैं सर से आसमाँ उठने का भी मातम नहीं करता।।

(4)

सहरा में गुलिस्ताँ की ज़रुरत नहीं मुझे।।
गुलशन में बागबाँ की ज़रुरत नहीं मुझे।।
सर पे जो मेरे हाथ है वालिद का जब तलक।
दुनिया के साएबां की ज़रुरत नहीं मुझे।।

(5)

शराफ़त का जो साँचा है उसी साँचे में ढ़ाला है।।
क़दम जब लड़खड़ाए हैं तो अब्बू ने सम्भाला है।।
अंधेरे मेरी आखों को कभी भैरा नहीं सकते।
मिरी राहों में अब्बू की हिदायत का उजाला है।।

(6)

फूल बख़्शे हैं मुझे शाखो समर बख़्शे हैं।।
होसला मुझको दिया तेग़ो तबर बख़्शे हैं।।
कोई दौलत न अता की है यक़ीनन लेकिन।
मुझको वालिद ने मेरे इल्मो हुनर बख़्शे हैं।।

(7)

यहाँ पर तू दिखाई दे वहाँ पर तू दिखाई दे।।
ये तेरा नूर है जो तू मुझे हर सू दिखाई दे।।
मैं तेरे बाद ये सोचूँ कि मेरा कौन हामीद है।
निगाहों में मुझे बस फिर मेरे अब्बू दिखाई दे।।

(8)

उनके आगे सभी नज़रों को झुका देते हैं।।
लड़ने आए हों तो हथियार गिरा देते हैं।।
पाँव पड़ते हैं मेरे वक़्त के सुल्ताँ आ कर।
हाथ वालिद जो मेरे सर पे फिरा देते हैं।।

(9)

बस्ती में शान रखते हैं ज़ीशान की तरह।।
कुन्बा उन्हें बताता है सुल्तान की तरह।।
अब्बू की दीद घर में इबादत से कम नहीं।
आँखों में रह रहे हैं वो क़ुरआन की तरह।।

(10)

ज़मीं बन्जर ही रह जाती जुताई की नहीं होती।।
मेरा किरदार मैला था सफ़ाई की नहीं होती।।
नहीं आता कभी मैं यूँ समझदारों की गिनती में।
मेरे अब्बू ने मेरी गर पिटाई की नहीं होती।।

(11)

मेरे बच्चों की दुआओं का सिला दे या–रब।।
ये करिश्मा तू मेरे घर में दिखा दे या–रब।।
तूने अय्यूब को बख़्शी है शिफ़ा वैसे ही।
मेरे वालिद को भी अब तू ही शिफ़ा दे या–रब।।

(12)

रहमतों में हर बला बदल गई।।
ज़ुल्मतों की हर घटा फिसल गई।।
सर पे हाथ बाप ने जो रख दिया।
जाँ बचा के फिर क़ज़ा निकल गई।।

(13)

किसे भेजा है तुमने ये सितारे तोड़ लाएँगे।।
तरस आता है कैसे ये बिचारे तोड़ लाएँगे।।
बुलालो भीड़ को सारी मेरे अब्बू ही काफ़ी हैं।
कहा जो मैंने उनसे तो वो सारे तोड़ लाएँगे।।

(14)

ख़ुद ही घोड़ा वो बने होंगे खिलाया होगा।।
मेरा बेटा है ज़माने को दिखाया होगा।।
उनकी आँखों में भी होगा वही मंज़र अब तक।
मुझको काँधे पे जो अब्बू ने बिठाया होगा।।

(15)

ख़्वाब झूठा न कभी हमको दिखाया कोई।।
उनके जैसा तो नज़र हमको न आया कोई।।
माँ जो खोजोगे तो दूजी न मिलेगी लेकिन।
बाप जैसा भी ज़माने में न आया कोई।।

(16)

फिज़ा हमवार होती है हवाएँ साथ चलती हैं।।
अगर हो धूप राहों में घटाएँ साथ चलती हैं।।
इरादा कर के घर से जब सफ़र का मैं निकलता हूँ।
मेरे वालिद की सर पर फिर दुआएँ साथ चलती हैं।।

(17)

उम्र जितनी थी वो अब्बू ने बिताई घर में।।
जो मिली उनको कमाई वो लगाई घर में।।
डिगरियाँ हमने ली कॉलेज से मदरसों से मगर।
हमको को तहज़ीब तो अब्बू ने सिखाई घर में।।

(18)

इम्तेहाँ ले ले मगर सब्र की दौलत दे दे।।
मेरे वालिद को ख़ुदा ताक़तो हिम्मत दे दे।।
ये मर्ज़ तू ने दिया है तिरी मर्ज़ी यारब।
पर हकिमों के भी हाथों में तू हिकमत दे दे।।

(19)

तपा कर सब्र की भट्टी से चन्दन–सा निकाला है।
वो जैसे खुद थे वेसा हमें साँचे में ढाला है।।
कड़ी मेहनत पसीने की कमाई घर में आई है।
बड़ी मेहनत मशक्कत से हमें अब्बू ने पाला ।।

(20)

काँटे हटा–हटा के गुलिस्ताँ बना दिया।।
रस्ता मेरी हयात का आसाँ बना दिया।।
दरिया अता किया मुझे इल्मो अदब का वो ।
वालिद ने मुझको नेक इक इन्साँ बना दिया।।

(21)

ग़रीबी में भी मुझको तो बड़े नाज़ों से पाला है।।
अंधेरा पाँव पकड़े था मेरे सर पर उजाला है।।
वफ़ा की राह पे चलना उसी पर जान दे देना।
शदाक़त के वो साँचे में मुझे अब्बू ने ढ़ाला है।।

(22)

बेटों ने सुबह बाप को जल्दी जगा दिया।।
सूरज उगा नहीं था कि धंधे लगा दिया।।
सारी कमाई बाप की जब घर में लग गई।
बेटों ने मिल के बाप को घर से भगा दिया।।

(23)

ज़रुरत है नहीं घर में मगर लेपटॉप लाता है।।
कमा के कुछ नहीं लाता नये सँताप लाता है।।
लुटा देता है बेटा किस तरह से एशो–इशरत में।।
बड़ी मुश्किल से पैसा जो कमा कर बाप लाता है।।

(24)

अन्धेरा जब भी छाया है उजाला बन के आए हैं।।
हमारी प्यास के आगे वो प्याला बन के आए हैं।।
कमाई कर के लाए हैं बड़ी मेहनत मशक़्क़त से ।
बन्धे हैं पेट पर पत्थर निवाला बन के आए हैं।।

(25)

बन कर खिलौना प्यार से सबको खिलाया है।।
घर में बिठा के पीठ पे घोड़ा घुमाया है।।
मुश्किल में डग–मगाए न हरगिज़ कभी क़दम।
अब्बू ने हाथ थाम के चलना सिखाया है।।

(26)

सर झुका लेते हैं रुस्तम भी धमक है ऐसी।।
इत्र संदल भी बहकते हैं महक है ऐसी।।
आँख सूरज जो मिलाता है सहम जाता है।
मेरे वालिद की निगाहों में चमक है ऐसी।।

(27)

सभी को बाँटते रहना यही खुश्बू से सिखा है।।
ज़ुबाँ मिस्री–सी रखना है यही उर्दू से सिखा है।।
गुनाहों पर निदामत से हमेशा सर झुका रखना।
न छूटे सब्र का दामन यही अब्बू से सिखा है।।

(28)

मेरे वालिद न कभी चैन से बैठे घर में।।
साथ गुर्बत के वो रहते भी तो कैसे घर में।।
ख़ुद को शिद्दत से कमाई में लगा रख्खा है।
होके बूढ़े भी तो दो पल नहीं लेटे घर में।।

(29)

अंधेरा है मेरे घर में सहन में तो उजाला है।।
ज़माने भर पे छाने का यहीं से ख़ाब पाला है।।
मेरे अब्बू का घर है ये भला इसको न बेचुँगा।
यहीं फ़ाक़े गुज़ारे हैं यहीं बचपन निकाला है।।

(30)

घर के हर कमरे को डिग्री से सजा रख्खा है।।
बाप के नाम की तख़्ती को हटा रख्खा है।।
लाख घर में जो लगा रख्खें है हिटर ऐसी।
बाप को फिर भी तो आँगन में बिठा रख्खा है।

(31)

अब भी रुत्बा मेरे अब्बू का वही है घर में।।
उम्र के साथ हुआ और इज़ाफ़ा डर में।।
मुझको शौहरत भी मिली है तो विरासत जैसी।
मेरी पहचान है वालिद से ज़माने भर में।।

(32)

अपने किरदार की खुश्बू को वहाँ घोल के आना।।
आज मीज़ान में इन्साफ़ को तू तोल के आना।।
जान जाती है अगर तेरी तो दे देना मगर।
मेरे वालिद ने कहा है कि तू हक़ बोल के आना।।

(33)

हिन्दी की बात हो कि वो उर्दू की बात हो।।
फूलों की बात हो कि वो खुश्बू की बात हो।।
कोई तरीक़ा हो यहाँ कोई ज़ुबान हो।
हर एक अदा में दोस्तो अब्बू की बात हो।।

(34)

वैसे तो कुछ नहीं हूँ मैं ख़ुद अपनी ज़ात में।।
फिर भी उरुज़ पाऊँगा अपनी हयात में।।
माना मेरे नसीब में कुछ भी नहीं मगर।
अपना नसीब देखा है अब्बू के हाथ में।।

(35)

गिर कर बलन्दियों से मैं उलटा लटक गया।।
गुँचा चमन में जैसे कि कच्चा चटक गया।।
ऊँगली पकड़ के अब्बू की चलता रहा मगर।
जब भी छुड़ाई ऊँगली तो रस्ता भटक गया।।

(36)

जब भी हेसार मेरी सिम्त नुमाया देखा।।
दूर तूफ़ान को सर मैंने झुकाया देखा।।
ख़ौफ़ खाते हुए सूरज ने पलटली आँखें।
उसने सर पर मेरे अब्बू का जो साया देखा।।

(37)

यूँ ही मिल कर मनाते थे सभी इतवार की खुशियाँ।।
उठा कर सर पे लाते थे सभी बाज़ार की खुशियाँ।।
मीठाई जूते चप्पल क्या नये कपड़े खिलौने सब।
हमें अब्बू लुटाते थे सभी त्यौहार की खुशियाँ।।

(38)

जुल्म ज़ालिम का मिटाने को बग़ावत दी है।।
साथ मज़लूम का देने की हिदायत दी है।।
सर कटा दूँगा मगर पीठ दिखाऊँगा नहीं।
मुझको वालिद ने मेरे ऐसी शुजाअत दी है।।

(39)

हमसे किसी का दिल भी दुखाया नहीं गया।।
अब्बू ने जो कहा था भुलाया नहीं गया।।
दुश्मन भी बन के रह गया महमान घर में फिर।
क़ातिल तलक भी हमसे भगाया नहीं गया।।

(40)

लाख राहों में बलाओं के जो फेरे हैं बहुत।।
हर क़दम पर यूँ दुआओं के भी ढेरे हैं बहुत।।
ज़िन्दगी मुझ पे तू थोड़ी–सी इनायत कर दे।
मेरे वालिद के अभी ख़ाब अधूरे हैं बहुत।।

(41)

ये ताज मेरे सर पे सजाया नहीं होता।।
मसनद पे किसी ने भी बिठाया नहीं होता।।
शौहरत ये ज़माने की न आती मेरे हिस्से।
वालिद ने अगर मुझको पढ़ाया नहीं होता।।

(42)

दर्दमन्दों की क़यादत मुझ अब्बू से मिली है।।
जुल्म ज़ालिम से बग़ावत मुझे अब्बू से मिली है।।
मैं शहंशाहों में तन कर जो खड़ा रहता हूँ।
ये रियासत ये विरासत मुझे अब्बू से मिली है।।

(43)

वही चहरे से ज़ाहिर है जो उनके दिल के अन्दर है।।
सख़ावत का अदालत का दुआओं का वो दृतर है।।
क़दूरत उनकी फ़ितरत को कभी भी छू नहीं सकती।
मेरे अब्बू के सीने में मोहब्बत का समुन्दर है।।

(44)

ज़िक्र उनका तो हवालों में उतर आता है।।
नूर जिस तरह उजालों में उतर आता है।।
किसी बच्चे को अगर कोई तसल्ली दे तो।
अक्स वालिद का निगाहों में उतर आता है।।

(45)

पहुँचेंगे हम भी देखना आला मक़ाम पर।।
दुनिया करेगी फ़िक्र हमारे कलाम पर।।
ताक़त नहीं है जीत की हममें कोई मगर।
दुनिया को जीत लाएँगे अब्बू के नाम पर।।

(46)

खुशी का कोई मौक़ा हो उन्हीं की राह तकता हूँ।।
जो उनकी याद आए तो मैं सारी रात जगता हूँ।।
मेरा भाई मेरे सीने से आकर जब लिपटता है।।
सुकूँ मिलता है जैसे में गले अब्बू के लगता हूँ।।

(47)

बे–चैन अभी हम भी हैं बेज़ार बहुत हैं।।
लड़ने के लिये हम भी यूँ तैयार बहुत हैं।।
इस वक़्त मगर मुश्किलों रुक जाओ अभी तुम।
अब्बू जो हमारे हैं वो बीमार बहुत हैं।।

(48)

सच्ची थी जिसको हमसे मोहब्बत चला गया।।
विरसे में हमको दे के वो दौलत चला गया।।
मेहफ़ूज़ जिसके साए में रहते थे रात दिन।
सर से वही तो सायाए श़फ़्क़त चला गया।।

(49)

मसाईल खुल्द के जो हों उसे तू दूर कर देना।।
बड़ा कर उनके मर्तब को तू जब्ले–नूर कर देना।।
मिटा कर जुल्मतें नूरे–मुजस्सम के उजालों से।
लहद को मेरे अब्बू की खुदा पूर–नूर कर देना।।

(50)

महबूबे किबरिया की शफ़ाअत नसीब हो।।
सरकारे दो जहान की क़ुरबत नसीब हो।।
अपने करम की सारी अताएँ लुटा दे फिर।
वालिद को मेरे या ख़ुदा जन्नत नसीब हो।।

(51)

तेरी औक़त क्या झूठे कोई सच्चा नहीं बोला।।
कोई रुस्तम ज़माने का कोई सूरमा नहीं बोला।।
बढ़ाता हाथ क्या कोई कभी मेरे गिरेबाँ तक।
मेरे अब्बू के रहते तो कोई ऊँचा नहीं बोला।।

(52)

तकलीफ़ ये नहीं है कि अच्छा नहीं कहा।।
ये भी नहीं है रंज कि सच्चा नहीं कहा।।
सब कुछ कहा है प्यार से एहबाब ने मगर।
अब्बू की तरह आज भी बेटा नहीं कहा।।

(53)

अंधेरी क़ब्र में लाकर मुझे जब सब सुला देंगे।।
फरिश्ते फिर गुनाहों की मेरे मुझको सज़ा देंगे।।
अचानक रुह को मेरी बड़ा आराम आएगा।
मेरे बच्चे जो कुरआँ पढ़ के मुझको फ़ातेहा देंगे।।

(54)

महसूस कर के देखले मैं तेरे पास हूँ।।
तेरी ज़ुबान हूँ मैं कभी तेरे हाथ हूँ।।
मुश्किल घड़ी में कान में अब्बूने ये कहा।
घबरा नहीं ऐ बेटे हमेशा मैं साथ हूँ।।

(55)

रोया वो सारी रात दीवाली नहीं हूई।।
समझा न कोई बात दीवाली नहीं हूई।।
वादा पिता का था कि दीवाली पे जाऊँगा।
लेकिन पिता के साथ दीवाली नहीं हूई।।

(56)

सरकारे दो जहाँ की शफ़ाअत नसीब हो।।
महशर में औलिया की जमाअत नसीब हो।
जलवों से उनकी क़ब्र को पूर नूर रख ख़ुदा।।
वालिद को मेरे ख़ुल्द की दौलत नसीब हो।।

(57)

दुनिया ये कह रही है कि आमिल बना दिया।।
उश्शाक़ कह रहे हैं कि आदिल बना दिया।।
एहसान सर से उतरे ये मुमकिन नहीं कभी।
वालिद ने मेरे मुझको जो क़ाबिल बना दिया।।

(58)

ऊँचाईयों का ख़ाब भी देखा उन्हीं ने था।।
भटका कभी जो राह से रोका उन्हीं ने था।।
मुझको बलन्दियों की ये ख़्वाहिश न थी मगर।
पहुचूँगा इस मक़ाम पे सोचा उन्हीं ने था।।

(59)

सुबह अब्बू का जल्दी से कमाई पर निकल जाना।।
थके हारे हुए फिर देर से घर लौट कर आना।।
मुझे लगता है अब्बू भी मेरे इस तरह से लोटेंगे।
परिन्दा जैसे आता है दबा कर चोच में दाना।।

(60)

गुलों पे लिख चुका हूँ मैं अभी ख़श्बू पे लिखना है।।
ये मशरीक और मग़रीब क्या मुझे हर सू पे लिखना है।।
लिखा है मैंने माँ पे जो वो काफ़ी तो नहीं लेकिन।
मिला गर वक़्त मुझको तो मेरे अब्बू पे लिखना है।।

(61)

सर पे उतरे हुए सूरज ने तपाया मुझको।।
सख़्त मुश्किल ने जो राहों में सताया मुझको।।
दूर राहों में जो साया नहीं पाया मैंने।
ख़ूब वालिद की मोहब्बत ने रुलाया मुझको।।

(62)

हर एक करवट पे उनकी रूह को राहत अता कर दे।।
मदीने वाले आक़ा की उन्हें कुर्बत अता कर दे।।
ख़ताएँ मेरे वालिद की हों जितनी बख़्श दे सारी।
ख़ुदाया फ़ज़्ल से अपने उन्हें जन्नत अता कर दे।

(63)

मेरे अब्बू मेरे अब्बू मेरे अब्बू मेरे अब्बू।।
जिधर भी देखता हूँ मैं नज़र में आप हो हर सू।।
गले हमको मिले यूँ तो ज़माना हो गया लेकिन।
मेरे तन पर महकती है अभी तक आपकी ख़ुश्बू।।

(64)

रहमान सिफ़त है तेरी रहमान का सदक़ा।।
दामन में मेरे डाल दे कुरआन का सदक़ा।।
वालिद को मेरे बख़्श दे जन्नत मेरे मौला।
हो मुझको अता यूँ महेरमज़ान का सदक़ा।।

(65)

मुश्किल में ये कभी भी न हिम्मत दिला सके।।
बीमार जब हुए तो न पानी पिला सके।।
परदेस जो गये थे कमाई के फेर में।
बेटे वही न बाप की मय्यत में आ सके।।

(66)

मेरे धर में अभी तहज़ीब की मीनार रख्खी है।।
मोहब्बत से भरी लब पर मेरे गुतार रख्खी है।।
मेरे वालिद को बख़्शी थी विरासत में जो दादा ने।
मेरे वालिद ने मेरे संर वही दस्तार रख्खी है।।

(67)

मेरे अब्बू की तरह मेरी मद्द की ख़ातिर।
बन के साया मेरी राहों में उतर आते हैं।।
सूरतें ही नहीं सीरत भी हैं यकसा उनकी।
मुझको चच्चा में मेरे अब्बू नज़र आते हैं।।

(68)

छतों में रह के भी देखो वो बेसाया ही रहते है।।
जो आए याद अब्बू की तो आँसू आप बहते हैं।।
अगर है आज वो घर में करो ख़िदमत नहीं तो फिर।
यतिमों से ज़रा पूछो कि किसको बाप कहते हैं।।

(69)

ठोकरें अब भी ज़माने में यूँ खाते हम भी।।
सर जहाँ देखो वहाँ अपना झुकाते हम भी।।
हमको अब्बू ने सलीक़े से न पाला होता।
आज शोहरत की बलन्दी पे न आते अब भी।।

(70)

उन्हें तकलीफ़ न पहुँचे मुझे वो काम करना है।।
मेरे अब्बू की खुशियों पर खरा मुझको उतरना है।।
विरासत का कोई शिकवा किसी से क्यूँ करुँ आख़ीर।
के अब्बू की वसीयत पर ही जीना और मरना है।।

☆☆☆

भाई

(1)

परेशानी में मुझको बस वही शाना दिखाई दे।।
मेरी हर आह से पहले उसे आहट सुनाई दे।।
मेरी मुश्किल घड़ी में वो हमेशा साथ रहता है।
मेरे भाई के जैसा ए ख़ुदा तू सबको भाई दे।।

(2)

भटका हुआ था भाई ठिकाने पे आ गया।।
रिश्ते लहू के फिर से निभाने पे आ गया।।
देखा जो इस ने मोत को आते मिरी तरफ।
भाई पलट के मेरा सिरहाने पे आ गया।।

(3)

तंगी की मुझको दे के दुहाई चला गया।।
मुझसे छुड़ा के अपनी कलाई चला गया।।
क्यूँ कर न आग घर में ख़ुदा मेरे लग गई।
छोटा मकान छोड़ के भाई चला गया।।

(4)

बुरा जब वक़्त आता है जहाँ आँखें दिखाता है।।
जिसे अपना समझते हैं वही दामन छुड़ाता है।।
परेशाँ जब भी होता हूँ चला आता है हिम्मत पर।
मुझे मुश्किल घड़ी में बस मेरा भाई बचाता है।।

(5)

मेरे माँ–बाप के आगे सियासत भाग जाती है।।
जो बहनें घर में आएँ तो अदावत भाग जाती है।।
अकेला देखती है तो सताती है मुझे लेकिन।
अगर भाई जो आजाए मुसीबत भाग जाती है।।

(6)

राह मुश्किल को तू आसान बनाना मौला।।
कुछ न सूजे तो तूही राह दिखाना मौला।।
फूल बन जाएँ सभी राह के काँटे उसके।
मेरे भाई को हर आफ़त से बचाना मौला।।

(7)

जंगल में हिफ़ाज़त में उसे शेर से रखना।।
महफ़ूज़ ज़माने की तू हर बैर से रखना।।
ख़ुशहाल रहें बच्चे भी फिर उसके हमेशा।
भाभी ओ मेरे भाई को तू ख़ैर से रखना।।

(8)

है मुझको गुनाहों पे निदामत मेरे मौला।।
कर मुझपे करम और ईनायत मेरे मौला।।
लम्बा है सफ़र और ये धान्धौर अन्धेरा।
भाई की मेरे करना हिफ़ाज़त मेरे मौला।।

(9)

मैं ये नहीं कहता हूँ कि सुल्तान बना दे।।
हर ग़म से मुसीबत से तू अन्जान बना दे।।
इस वक़्त परेशान है इमदाद हो यारब।
मुश्किल तू मेरे भाई की आसान बना दे।।

(10)

किसी का डर नहीं मुझको जो दंगाई भी आते है।।
तेरे जो साथ में बस्ती के हरजाई भी आते हैं।।
अकेला जान कर ज़ालिम कभी भी वार मत करना।
लड़ाई मेरी लड़ने को मेरे भाई भी आते हैं।।

(11)

मेरे शाने जो झुकते हैं वही बोझा उठाता है।।
परेशाँ जब भी होता हूँ वही हिम्मत दिलाता है।।
लबों पे भूक का शिकवा कभी बच्चों के आता है।
मेरा भाई है जो अकसर मेरा चल्हा जलाता है।।

(12)

घर से निकल के मेरे जो कोई बला चली।।
तू ये समझना बस कि वो तेरी क़ज़ा चली।।
बदला वो मेरे ख़ून का लेकर रहेगा फिर।
भाई को मेरे क़त्ल की साजिश पता चली।।

(13)

ज़ालिम ने सितम यूँ तो क्या क्या नहीं ढ़ाया।।
मुश्किल से मगर हमने घर अपना बचाया।।
उस दिन से सितमगर ने भी गर्दन न उठाई।
जिस दिन से लड़ाई पे भाई मेरा आया।।

(14)

पटकने को ज़माने में कहाँ पर सर नहीं जाता।।
समझ थोड़ी भी होती तो यूँ ही दर–दर नहीं जाता।।
खुदा के घर भी उसकी हाज़री पूरी नहीं होती।
जो अपने भाई से मिलने को उसके घर नही जाता।।

(15)

हज़ारों बार बोलो भी तो सुनवाई नहीं होती।।
कभी अलफ़ाज़ से ज़ख़्मों की भरपाई नहीं होती।।
जुबाँ जब खोलना हो तो सम्भल कर खोलना भाई।
के दिल के ज़ख़म खुल जाऐं तो तर पाई नहीं होती।।

(16)

ख़ुशियों का वो मेरे लश्कर उठा गया।।
अम्नो अमाँ का वो मेरे दतर उठा गया।।
विरसे का एक मकान था तकसीम में मगर।
भाई रईस हो के भी छप्पर उठा गया।।

(17)

तोहमतें हम लगाकर के गुज़र जाओगे।।
लोग लानत तुम्हें भेजेंगे जिधर जाओगे।।
अपने भाई की बुराई जो करोगे घर–घर।
ख़ुद ज़माने की निगाहों से उत जाओगे।।

(18)

ये दुनिया ये दौलत ये पैसा ये पाई।।
यहाँ की यहाँ पर रही है कमाई।।
मुझे तूने रो–रो के भाई जो दी थी।
दुआ रोज़ मेहशर वही काम आई।।

(19)

तकलीफ़ उसे दी है तो राहत भी अता कर।।
कमज़ौर न हो जाए वो ताक़त भी अता कर।।
हर एक मुसीबत से वो लड़ने को खड़ा हो।
भाई को मेरे इतनी तू हिम्मत भी अता कर।।

(20)

ख़ालिक तू जहाँ का है सज़ा दे कि जज़ा दे।।
इस वक़्त भला मेरी ख़ाताओं को भुला दे।।
सर मेरा निदामत से झुका है तेरे आगे।
बीमार जो भाई है मेरा उसको शिफ़ा दे।।

(21)

अगर नाराज़ हो तो कर दर गुजर मेरी ख़ता करना।।
फिर उसके बाद ही उन से ये अर्ज़े मुददुआ करना।।
शिफ़ाए कामला या–रब सभी बीमार को दे दे।
मेरे भाई के हक़ में भी खुदा से ये दुआ करना।।

(22)

तुर्बत में उनको ख़ुल्द की नेअमत नसीब हो।।
महशर में मुस्तफ़ा की शफ़ाअत नसीब हो।।
रेहलत जो कर के आ गए तेरे हुज़ूर में।
अल्लाह मेरे भाई को जन्नत नसीब हो।।

(23)

माना कि वो पहले–सा अब प्यार नहीं है।।
है शुक्र ख़ुदा का कोई टकरार नहीं है।।
मुद्दत हुई भाई को गुज़रे हुए लेकिन।
आँगन में मेरे आज भी दीवार नहीं है।।

बहन

(1)

क्या है मर्ज़ी क्या इरादा नहीं समझा कोई।।
जो भी समझा है तो पूरा नहीं समझा कोई।।
थोड़ा–थोड़ा तो यूँ जाना है सभी ने लेकिन।
मुझको बहनों से ज़्यादा नहीं समझा कोई।।

(2)

काम होता है तो हर काम पे आ जाती हैं।।
सर कटाने को मेरे नाम पे आ जाती हैं।।
मुश्किलें जब कभी आती है मेरे घर की तरफ़।
मेरी बहनें हैं जो फिर बाम पे आ जाती हैं।।

(3)

माल माँ–बाप का बैठा हूँ जो क़ब्ज़ा ले कर।।
मुतमई हूँ मैं विरासत का ये पट्टा ले कर।।
मेरी बहनों का मगर मुझ पे है क़र्ज़ा बाक़ी।
हाथ ख़ाली जो गई सर पे दुपट्टा ले कर।।

(4)

कोई मकसद न कभी सामने लाई अपना।।
जब भी आयी है तो बस प्यार ही लाई अपना।।
रात दिन मुझपे निछावर यूँ रही मेरी बहन।
ख़ुदको तन्हा नहीं समझे कहीं भाई अपना।।

(5)

दिल को आराम मिले ख़ाब रंगीले हो जाएँ।।
फ़िक्र के तार जो माथे पे है ढ़ीले हो जाएँ।।
चैन की नींदे मुझे भी हो मयस्सर यारब।
मेरी बहनों के अगर हाथ भी पीले हो जाएँ।।

(6)

मेरी क़िस्मत ने जुल्मत की घटाएँ जब मुझे भेजीं।।
मेरे आमाले बद ने भी बलाएँ जब मुझे भेजीं।।
सभी ये फूल बन कर फिर मेरे क़दमों में आई थीं।
मेरी बहनों ने रो–रो कर दुआएँ जब मुझे भेजीं।।

(7)

मेरे हर ग़म में ये शामिल मेरी जाँ बन के रहती हैं।।
बलाएँ मुझ पे गर आएँ तो अपने सर पे लेती हैं।।
खुदा पे छोड़ देती हैं वो अपनी हर परेशानी।
मगर मुझको मेरी बहनें दुआ रो–रो के देती हैं।।

(8)

भुला कर खुद को यादों में मुझे दिन रात रखती हैं।।
दुखाती ही नहीं दिल ये मेरी हर बात रखती हैं।।
मेरी माँ का है साया ये मुझे महसूस होता है।
मेरे सर पर कभी बहनें जो अपना हाथ रखती हैं।।

(9)

हर गुमशुदा के चेहरे को मुस्कान बख़्श दे।।
खुशियों का कुल जहान का सामान बख़्श दे।।
कमज़ौर नातवानों को ताक़त तू कर अता।
बीमार जो बहन है उसे जान बख़्श दे।।

(10)

इन्हीं से घर में राहत है इन्हीं से घर की बरकत है।।
इन्हीं से घर की रौनक़ है इन्हीं से घर की ज़ीनत है।।
यही आँगन में मेरे बन के बुलबुल–सी चहकती हैं।
इन्हीं बहनों की आमद से मेरा घर रश्के जन्नत है।।

(11)

खुदा ने हूरो ग़िलमाँ–सा हसीं रिश्ता बनाया है।।
फ़लक पर चाँद सूरज को सलिक़े से सजाया है।।
मेरी बहनों की चाहत पर मुझे भी फ़ख़्र होता है।
जो सर में दर्द हो मेरे तो बहनों ने दबाया है।।

(12)

अगर जो फूल मुरझाएँ तो खुश्बू छटपटाती है।।
नहीं हो तेल बाती में तो लौ भी थर–थराती है।।
नज़र से दूर हो भाई वहन रंजीदा रहती है।
ख़बर आने की मिलजाए बहन फिर मुस्कुराती है।।

(13)

हाल मेरा देख कर मचल गई।।
उसकी आह ज़िन्दगी बदल गई।।
काम आ गई दुआ बहन की फिर ।
बे–असर जो सब दवा निकल गई।।

(14)

महफूज़ रखना बहनों को भाई को ए खुदा।।
हरगिज़ नज़र से मेरी न करना इन्हें जुदा।।
हर दिन हमारा गुज़रे मोहब्बत के साथ में।
मिलजूल के एक घर में यूँ जीते रहें सदा।।

(15)

ख़बर लेने तुम्हारी फिर सुबह से शाम आएँगी।।
वज़ीफ़ा लब पे लेकर ये तुम्हारे नाम आएँगी।।
अभी दुनिया को तुमसे है ग़रज़ तो साथ है लेकिन।
ये ठुकराएगी जिस दिन भी तो बहनें काम आएँगी।।

(16)

वो पीती हैं अगर कुछ तो मुझे पहले पिलाती हैं।।
कोई नेअमत जो खाती हैं मुझे पहले खिलाती हैं।।
ख़बर मिलती है उनको जब मेरे राहों में होने की।
मेरी राहों में आँखें ही नहीं वो दिल बिछाती हैं।।

(17)

नहीं हो फूल गुलशन में तो तितली छटपटाती है।।
दुखी हो भाई जब घर में बहन कब मुस्कुराती है।।
दुआएँ जब वो देती है उठा कर हाथ भाई को।
जुबाँ खुलती नहीं है आँख उसकी डब–डबाती है।।

(18)

ख़ून बढ़ जाता है बहनों की ख़बर आती है।।
माँ से मिलने के लिये लख़्ते जिगर आती है।।
लाख बीमार भी होती है तो उठ जाती है।
घर में माँ को जो बहन मेरी नज़र आती है।।

(19)

जिसको जो याद रहा वो ही अताएँ माँगी।।
मेरे एहबाब ने पूर–कैफ़ फ़िज़ाएँ माँगी।।
अपनी ख़ातिर तो सभी माँग रहे थे लेकिन।
मेरी बहनों ने मेरे हक़ में दुआएँ माँगी।।

(20)

पल में हाज़िर हुई बहनें जो पूकारा घर में।।
नाज़ हर एक उठाती हैं हमारा घर में।।
अपनी क़िस्मत में कहाँ था कि गुज़ारा होता।
अब भी बहनों का ही खाते हैं उतारा घर में।।

(21)

काश बहनों के सरों पर भी दुपट्टा होता।।
पेरहन इनके बदन पर भी न नंगा होता।।
सारी मिल्लत न ज़माने में यूँ रूस्वह होती।
गर दरिन्दों के गलों में भी जो फ़न्दा होता।।

(22)

तबस्सुम से भरी होठों पे अपने डालियाँ लेकर।।
मसर्रत से भरी हाथों में अपने थालियाँ ले कर।।
मुसीबत दूर हो उनकी खुशी दामन में भर देना।
मेरे मालिक मेरी बहनें जो आएँ राखियाँ लेकर।।

(23)

उनकी पलकों पे नये ख़ाब सजाना मौला।।
वो जिधर जाएँ उधर फूल खिलाना मौला।।
भूल कर ख़ूदको मेरे हक़ में दुआ करती हैं।
मेरी बहनों को मुसीबत से बचाना मौला।।

बच्चे

(1)

लगाकर अब वो तितली की तरह से पर नहीं जाती।।
बुज़ुर्गों के भी आगे अब वो नंगे सर नहीं जाती।।
सयानी हो गई जब से बड़ी शर्मिली रहती है।
अकेली अब मेरी बेटी किसी के घर नहीं जाती।।

(2)

दस्तार जो नहीं तो सिकन्दर अधूरा है।।
ख़ुश्बू बग़ैर जैसे गुलेतार अधूरा है।।
बेटे हों कितने घर में मगर फिर भी ए फ़राज़।
बेटी नहीं है घर में तो फिरं घर अधूरा है।।

(3)

जीते हैं किस अदा से वो जीना सिखा गई।।
माँ-बाप के सरों को जहाँ में उठा गई।।
बेटे ज़रुरी हैं नहीं नसलों के वास्ते।
बेटी मेरे रसूल की सबको बता गई।।

(4)

परेशाँ लाख हो बेटी मगर मुझ से छुपाती है।।
मुझे मिलने जो आती है हँसी तोहफ़ में लाती है।।
बहुत खुश हूँ मैं फिर भी तो उसे ग़मगीन दिखता हूँ।
हमेशा मुस्कुराने के मुझे नुस्ख़े बताती है।।

(5)

मेरी जन्नत से जाती हैं कभी जब तितलियाँ मेरी।।
फटी रहती हैं आँखों की हमेशा पुतलियाँ मेरी।।
नबी से फ़ातमा ज़ौहरा के सदक़े मैंने सिखा है।
अगर क़ुरआन माँऐं हैं हदीसें बेटियाँ मेरी।।

(6)

रोज़ा नमाज़ घर की इबादत चली गई।।
आँखों से मेरे मेरी ज़ियारत चली मई।।
बेटी की रुख़सती पे मुझे घर में यूँ लगा।
क़ुरआन रह गया है तिलावत चली गई।।

(7)

क़तरा कहीं पे देखा समुन्दर उठा गया।।
मौसम हमारी आँख से मंज़र उठा गया।।
विरान घर हुआ मेरा रौनक़ चली गई।
दामाद आके घरसे जो दुख़्तर उठा गया।।

(8)

यूँ तो दुनिया ही मोहब्बत की क़सम खाती है।।
पर मुसीबत में ये अन्जान हुई जाती है।।
घर में माँ–बाप हैं बीमार ख़बर ये सुन कर।
एक बेटी है जो दौड़ी–सी चली आती है।।

(9)

हर किसी से पूछती पता निकल गई।।
लब पे ले के फिर दुआ निकल गई।
देर तक न घर गया तो ढूँढने।
ले के बेटी एक दिया निकल गई।।

(10)

मुश्किल से मेरी बेटी को हर दम निकाल कर।।
दोनों जहाँ की दौलतें झोली में डाल कर।।
सारा जहान उसकी मिसालें दे ए ख़ुदा।
ताउम्र ऐसी रखना तू नेकी में ढ़ाल कर।।

(11)

लोग मौसम जिसे कहते हैं वो हर जाई है।।
मेरे आँगन में जो सावन की घटा छाई है।।
आज बेटी जो चली आई है मिलने मुझसे।
ऐसा लगता है कि गुलशन में बहार आई है।।

(12)

हमेषा मुस्कुराएँ जो वो चहरे ढ़ाल जाती है।।
चली जाती है घर से पर वो खुशियाँ डाल जाती है।।
सुकूनो चेन मिलता है लिपट जाती है सीने से।
रुला देती है बेटी जब कभी ससराल जाती है।।

(13)

बेटे मेरा दिल हैं लेकिन बेटी मेरी जान रही।।
बेटों से भी शान बड़ी पर बेटी से पहचान रही।।
बेटों ने तो रिश्ते नाते पल भर में सब तोड़ दिये।
बेटी मेरी लेकिन मुझ पर जीवन भर कुरबान रही।।

(14)

मुश्किल सारी बेटों की है बेटी तो आसान रही।।
बेटों में है हाथा–पाई बेटी में मुस्कान रही।।
बेटों ने अहसान जताकर घर में हिस्सा माँग लिया।
ख़िदमत करने वाली बेटी मेरे घर महमान रही।।

(15)

मेरी इज़्ज़त मेरी अज़्मत मेरी चाहत बेटी।।
मेरी दौलत मेरी कुव्वत मेरी ताक़त बेटी।।
काम करती है ज़रुत से भी ज़्यादा लेकिन।
शिकवा करती है किसीसें न शिकायत बेटी।।

(16)

कोई चिड़िया मेरे आँगन में आ कर फुद–फुदाती है।।
लचकती डाल पर कोयल जो सरगम छेड़ जाती है।।
वो कोसों दूर है लेकिन करिश्मा कर के जाती है।
ख़यालों में मेरी बेटी भी आ कर मुस्कुराती है।।

(17)

फिर तेरी याद में बेटी मेरी आँखें नम है।।
हाथ उठ्ठे हैं दुआ के लिये गर्दन ख़म है।।
अश्क बह जाएँ अगर चे ये समुन्दर की तरह।
फिर भी तुझसे ये जुदाई का तो मातम कम है।।

(18)

कुरबाँ तुम पर सारी खुदाई।।
तुम पर हमने जान लुटाई।।
जन्म दिन पर प्यारी बेटी।
लाखों लाखों तुमको बधाई।।

(19)

मसर्रत से भरा या–रब तुझे गुलशन अता कर दे।।
सुकूनो चैन हो जिसमें वही मसकन अता कर दे।।
दुआ देता हूँ बेटी ये तेरे यवमे विलादत पर।
नबी की प्यारी बेटी का ख़ुदा दामन अता कर दे।।

(20)

ये वो दिन है कि मेरे घर खुशी भर पूर आई है।।
उतर कर आसमाँ से फिर मेरे घर हूर आई है।।
तेरे यवमे विलादत की मुबारकबाद हो तुझको।
मेरा घर हो गया रोशन तू बन कर नूर आई है।।

(21)

किसी से भी न दुनिया में कोई फ़रियाद हो तुमको।।
सबक़ जो ज़िन्दगी का है वही बस याद हो तुमको।।
खुदा दे उम्र में बरकत हमेशा मुस्कुराओ तुम।
मेरी बेटी जनम दिन की मुबारकबाद हो तुमको।।

(22)

खुदा की तुम पे हो नज़रें मेरी बेटी इनायत की।।
कभी आदत न छूटे तुमसे कुरआँ की तिलावत की।।
तुम्हें दौलत तुम्हें शौहरत तुम्हें इज़्ज़त खुदा बख़्शे।
मुबारकबाद हो बेटी तुम्हें यवमे विलादत की।।

(23)

तुझ में आता है नज़र मुझ को सरापा मेरा।।
तूने आ कर किया आबाद बुढ़ापा मेरा।।
तुझको काँधे पे उठाने में मज़ा आता है।
तू ही एक रोज़ उठाएगा जनाज़ा मेरा।।

(24)

अच्छी सहत दे ख़ुशियाँ दे उम्रे दराज़ दे।।
किरदार की बलन्दियाँ इल्मे फ़राज़ दे।।
दरकार जो भी है वो नवासे को कर अता।
तेरा करम है मौला तू सब कुछ नवाज़ दे।।

(25)

पाला था मैंने दिल मे वो अरमान मर गया।।
हर ख़ाब मेरे पाँव में आकर बिखर गया।।
तहज़ीब मेरे घर में ही लँगड़ा गई है ख़ुद।
बेटी के सर से मेरी दुपट्टा उतर गया।।

(26)

बुराई से बचे तू और तेरे दिल में भलाई हो।।
भला किरदार ही तेरा तेरी सच्ची कमाई हो।।
करे शामिल तुझे या–रब हमेशा नेक बन्दों में।
मेरे बेटे तुझे यवमे विलादत की बधाई हो।।

(27)

दूर रहो तुम हमसे लेकिन करते हैं हम याद।।
कब आओगे लौट के घर पर लब पे है फरियाद।।
देते हैं हम दिल से दुआएँ शाद रहो आबाद।।
जन्म दिन की बेटे तुमको सौ सौ मुबारकबाद।।

(28)

नमाज़ो रोज़ाओ सदक़ा इबादत और तिलावत की।।
कभी राहें नहीं छुटे शराफ़त और हिदायत की।।
ख़ुदा दे उम्र में बरकत सहत की दौलतें तुमको।
मुबारकबाद हो बेटे तुम्हें यवमे विलादत की।।

(29)

हुस्ने अख़लाक दे अख़लाक का पैकर कर दे।।
ईल्म कर इतना अता उनको समुन्दर कर दे।।
उनको मोहताज न दुनिया में किसी का रखना।
मेरे मालिक मेरे बच्चों को सिकन्दर कर दे।।

(30)

तू भी राज़ी हो ज़माने को भी राज़ी कर दे।।
हक़्क़ो बातिल के तू मैदान का ग़ाज़ी कर दे।।
मैं भी मस्जिद में चला जाऊँ अज़ाने सुन कर।
मेरे बच्चों को भी मौला तू नमाज़ी कर दे।।

(31)

मेरी आँखों ने कोई ख़ाब न बेज़ा देखा।।
दिल ने चाहा था मेरी आँख ने वैसा देखा।।
ये करम रब का है मस्जिद में नमाज़ी बन कर।
सफ़े अव्वल में खड़ा मैंने जो बेटा देखा।।

(32)

मेरे एहबाब से रिश्ते मेरे बच्चे निभाते हैं।।
बुज़ुर्गों से हमेशा वो अदब से पेश आते हैं।।
सुकूँ मिलता है दिलको तो मसर्रत रुह को मेरी।
मेरे बच्चे सरहाने बैठ कर जब सर दबाते हैं।।

(33)

गर्दिशों का ख़याल मत करना।।
हादसों का मलाल मत करना।।
देर तक मेरी मौत का मातम।
ऐ मेरे नव–नेहाल मत करना।।

(34)

ख़मीर चुप जो रहेगा ख़ुमार बोलेगा।
दिलों में बुग़्ज़ जो होगा गुबार बोलेगा।।
ज़माना फ़ख़्र से देखेगा मेरे बच्चों को।
ज़ुबाँ से उनकी जो मेरा वक़ार बोलेगा।।

(35)

करम अल्लाह का होगा बड़े ज़ीशान आएँगे।।
भरोसा है मुझे बन कर भले इन्सान आएँगे।।
मेरी आदत मेरी सीरत मेरे किरदार को लेकर।
मेरे बच्चे ज़माने में मेरी पहचान आएँगे।।

(36)

अंधेरे दर बदर होंगे उजाले छक–पकाएँगे।।
वो जिन ज़र्रों को छू देंगे जहाँ में जग–मगाएँगे।।
मेरे बेटों को मुझसे भी बड़ा वो मर्तबा देगा।
हुकुमत ख़ाक में होगी तो हाकिम सर झुकाएँगे।

(37)

न मेरी याद में कोई कहीं पत्थर लगा देना।।
न मेरा मकबरा यारो कहीं पर तुम बना देना।।
अगर मुझसे मोहब्बत है तो मेरी ये गुज़ारिश है।
मेरे बच्चों को चाहो तो उन का हक़ दिला देना।।

(38)

न तो रुह बख़्श हवाओं ने बचाया मुझको।।
न हकिमों की दवाओं ने बचाया मुझको।।
मैं तो मर जाता मरज़ एसा मर्ज़ हुआ था लेकिन।
मेरे बच्चों की दुआओं ने बचाया मुझको।।

(39)

ज़िन्दगी मुझको तू बच्चों की बदौलत दे दे।।
मेरे बच्चों को अभी बाप की दौलत दे दे।।
मेरे बच्चे भी तो पढ़ लिख के जवाँ हो जाएँ।
मेरे मौला मुझे थोड़ी–सी तो मोहल्लत दे दे।।

(40)

हो उम्र मेरी लम्बी दिन रात दुआ की।।
बीमार हुआ जब भी तो ख़िदमत की दवा की।।
तारीफ़ जहाँ में है औलाद हो ऐसी।
बच्चों ने मेरे मुझको इज़्ज़त वो अता की।।

(41)

तुम्हें दरकार थी बच्चों वो शौहरत दे नहीं पाया।।
गरीबी की वजह से मैं वो अजमत दे नहीं पाया।।
हज़ारों कोशिशों के बाद भी मुठ्ठी में लाया हूँ।
ज़रुरत के मुताबिक तुमको दौलत दे नहीं पाया।।

(42)

मेरे बच्चों को मुकद्दर में तजल्ली देना।।
उनकी गुतार में मीठास की डल्ली देना।।
अब सिवा तेरे नहीं घर का मुहाफ़िज़ कोई।
तू ही घर भर को खुदा मेरे तसल्ली देना।।

(43)

रहे राज़ी हर एक पल तू उन्हें वो बन्दगी देना।।
करें दोनों जहाँ रोशन अमल की रोशनी देना।।
परेशानी मुसीबत से बचाना हर घड़ी इनको।
मेरे बच्चों को ए मौला तू मेरी ज़िन्दगी देना।।

(44)

माना कि मैंने चाहा था वैसा नहीं हुआ।।
फिर भी कहूँ मैं कैसे कि अच्छा नहीं हुआ।।
कँधों पे बोझ उम्र का बढ़ता रहा मगर।
बच्चों की फ़िक्र में कभी बूढ़ा नहीं हुआ।।

(45)

जहाँ में देखा हैं ऐसा हुज़ूर होता है।।
हसब नसब का असर भी ज़रुर होता है।।
ग़रीब बच्चे तो मिलते हैं बा-अदब लेकिन।
रईस बेटों में फिर भी ग़ुरुर होता है।।

(46)

ईल्म की शम्आ बना कर तू जलाना मौला।।
इनसे दुनिया के अन्धेरों को मिटाना मौला।।
आँधियाँ इनको सताएँ जो ज़माने की कभी।
मेरे बच्चों को मुसीबत से बचाना मौला।।

(47)

अजदाद से दिलों की वो ज़रदारी सीखली।।
अहबाब से ग़ज़ब किया फ़नकारी सीखली।।
फ़ाक़ाकशी की मुझको भी कोई ख़बर न दी।
बच्चों ने मेरे मुझसे ये ख़ुद्दारी सीखली।।

(48)

ये मेरी दुआ है कि तू इन्सान बना दे।।
फिर तेरा करम है जो तू सुल्तान बना दे।।
नसलों को मेरी ईल्म की दौलत तू अता कर।
बच्चों को मेरे क़ारी–ऐ क़ुरआन बना दे।।

(49)

बुज दिल थे देखो सारे नक़ाबों में आ गये।।
काँटे भी सर छुपा के गुलाबों में आ गये।।
एहले अदब ने बीज तआसुब के जो दिये।
बच्चे वही तो ले के किताबों में आ गये।।

(50)

घनी है धूप मेरी राह में शजर दे दे।।
किसी भी शाख़ पे उम्मीद का समर दे दे।।
भटक रही हैं ज़माने से पीढ़ियाँ मेरी।
मेरे ख़ुदा मेरे बच्चों को कोई घर दे दे।।

(51)

ज़माने भर में भटकते हैं झोलियाँ ले कर।।
ग़रीब बच्चे मुक़द्दर की अर्ज़ियाँ ले कर।।
ख़ुदाया भूक से इनको निजात दे देना।
खिलौने बेच के आये हैं रोटियाँ ले कर।।

(52)

सुस्त बहती हुई नदिया ने रवानी पकड़ी।।
राह बेटी ने मेरी जैसे सयानी पकड़ी।।
मैं खिलौने अभी बाज़ार से लाया ही नहीं।
मेरे बच्चों ने पलक झपके जवानी पकड़ी।।

(53)

ख़ुशियों का मुझको आज भी दतर नहीं मिला।।
शादाब ज़िन्दगी का वो लश्कर नहीं मिला।।
गुर्बत को ओड़े देखो चटाई पे सो गये।
बच्चों को मेरे आज भी बिस्तर नहीं मिला।।

(54)

अब भी मिट्टी का न आया है खिलौना घर में।।
ख़ाब देखेगा कोई कैसे सलौना घर में।।
तू ने इज़्ज़त तो अता की है ज़माने की मगर।
मेरे बच्चों को न मिलता है बिछौना घर में।।

(55)

लग गई घर को मेरे कोई नज़र लगता है।।
ख़ूब रोती है मेरी शामो सहर लगता है।।
मेरे बच्चे न कहीं माँगलें कपड़े मुझसे।
कोई त्यौहार जो आता है तो डर लगता है।।

(56)

साँस लेने जहाँ बैठूँ वो ठिकाना नहीं आया।।
मेरे बच्चे अभी छोटे हैं कमाना नहीं आया।।
मुझको माँ–बाप मेरे अब भी जवाँ कहते हैं।
मेरे बूढ़े अभी होने का ज़माना नहीं आया।।

(57)

मेरे बच्चे ज़माने में कभी डर कर नहीं रहते।।
किसी के सामने अपना झुकाए सर नहीं रहते।।
ज़रुरत फिर मुझे आराम की मोहल्लत नहीं देती।
शिकायत है ये बच्चों की के अब्बू घर नहीं रहते।।

(58)

मौसम–सी वो रतार मैं कर नहीं पाया।।
फिर वक़्त से गुतार मैं कर नहीं पाया।।
बे–परवाह रहा बच्चो ऐसा भी नहीं पर।
घर को कभी गुलज़ार मैं कर नहीं पाया।।

(59)

जहाँ में कुछ भी खो जाए कभी भी ग़म नहीं करना।।
किसी के भी बिछड़ने का कभी मातम नहीं करना।।
पेरेशाँ हो भी जाओ तो हमेशा हौसला रखना।
किसी भी हाल में आँखें कभी तुम नमन हीं करना।।

(60)

कभी मंज़िल दिखाता है कभी रस्ता दिखाता है।।
किसी की राह में हर पल सितारा जग–मगाता है।।
सुना है उसके बेटे ने वक़ालत पास कर ली है।
अदाल की जो सीढ़ी पर अभी झाडू लगाता है।।

(61)

चराग नूर का राहों में जलने वाला है।।
उदास आँखों का मंज़र बदलने वाला है।।
हमारा बेटा भी तालीम ले के आया है।
हमारे घर से भी सूरज निकलने वाला है।।

(62)

सवालों के मेरे आगे कई अम्बार ले आए।।
तआजुब क्या जो हाथों में कभी अँगार ले आए।।
वो करते भी तो क्या घरमें जो फ़ाक़े चार दिनके थे।
निलामी के लिये बच्चे मेरी दस्तार ले आए।।

(63)

ईल्म की चाह में शम्आ–सा जला जाता हूँ।।
जितना बढ़ता हूँ मैं उतना ही झुका जाता हूँ।।
जब भी लगता है फ़रिश्तों में कहीं जा बैठूँ।
अपनी बस्ती के मैं बच्चों में चला जाता हूँ।।

(64)

अब कोई किसी का कभी कालर नहीं पकड़े।।
जो कुछ भी हुआ हो गया आगे नहीं झगड़े।।
आपस में सभी बैठ के हल कोई निकालें।
ताकि किसी बच्चे का भी .यूचर नहीं बिगड़े।।

(65)

बदले में शरीफ़ों को शराफ़त नहीं देते।।
ख़ुद अपनी ख़ताओं पे भी राहत नहीं देते।।
बेटा तो मेरा अब भी चाहता है पढ़ाई।
लेकिन उसे हालात इजाज़त नहीं देते।।

(66)

रात जल्दी से उन्हें कैसे सुलाए कोई।।
देर तक सोते हैं कैसे यूँ जगाए कोई।।
घर से बाहर जो वो रहते हैं बुरा लगता है।
मेरे मौला मेरे बच्चों को बताए कोई।।

(67)

करम की तू चादर कोई डाल रखना।।
रहम उनके दामन में हर हाल रखना।।
कोई रंज उनको कभी छू न पाए।
ख़ुदा मेरे बच्चों को ख़ुशहाल रखना।।

(68)

ईल्म तहज़ीब तमद्दुन है तो दौलत क्या है।।
हुस्ने अख़लाक़ मोहब्बत है तो शौहरत क्या है।।
बेच कर खून मैं आया हूँ किताबें लेकर।
मुझको मालूम है बच्चों की ज़रुरत क्या है।।

(69)

ताक़त के नशे में भी तो वो चूर बहुत है।।
मस्ती में जवानी की वो मसरुर बहुत है।।
मैं कैसे कहूँ बात वो समझेगा यक़ीनन।
बेटा है बड़े बाप का मग़रुर बहुत है।।

(70)

आँधी ये कैसी आई के बगिया उजड़ गई।।
तहज़ीब की जड़ें भी वो सारी उखाड़ गई।।
ज़ालिम न जाने कैसी किताबें थमा गए।
पढ़ कर जिन्हें हमारी ये नसलें बिगड़ गई।।

(71)

कानों में रस जो घोले तू ऐसी ज़ुबान दे।।
इल्मो अदब की ऊँची से ऊँची उड़ान दे।।
ठोकर तलक न पाँव में उनके लगे कभी।
अल्लाह मेरे बच्चों को इतनी अमान दे।।

(72)

शिकवा नहीं है कोई शिकायत नहीं मुझे।।
दुनिया की कोई शय से मोहब्बत नहीं मुझे।।
दौलत जहाँ की छोड़ दी एहबाब के लिए।
बच्चे हैं मेरे नेक ज़रुरत नहीं मुझे।।

(73)

मुरझा गये जो धूप में वो फिर न खिल सके।।
विरसे में जो मिले थे वो कर्जे़ न धुल सके।।
बस्ती में हमको ऐसे भी बच्चे मिले जिन्हें।
कपड़े मिठाई क्या है पटाख़े न मिल सके।।

(74)

मस्ती में अपनी जाके वो मसरुर हो गया।।
माँ–बाप की नज़र से बहुत दूर हो गया।।
निकला शहर वो गाँव की तहज़ीब छोड़ कर।
बेटा पढाई कर के भी मग़रुर हो गया।।

(75)

काश औरों की तरह फूल चड़ाने आते।।
बाद मरने के भी रिश्ता वह निभाने आते।।
क़ब्र में रूह मेरी और सुकूँ से रहती।
मेरे बच्चे भी जो कुरआन सुनाने आते।।

(76)

तहज़ीब की अमानतें मिट्टी में डाल कर।।
अरमान सारे बौ दिये दिल से निकाल कर।।
बेटों को चाहिये कि हिफ़ाज़त किया करें।
हमने शजर बना दिया पौधे को पाल कर।।

(77)

नहीं कुछ आरज़ू मुझको मगर इतनी खुशी दे दे।।
हुई मायूस माँ मेरी उसे थोड़ी हँसी दे दे ।।
करम बच्चों पे कर मेरे अभी नादान हैं कितने।
जवाँ होने तलक मुझको खुदाया ज़िन्दगी दे दे।।

(78)

ज़माने में रहे ऊँचा इन्हें वो सर अता करना।।
रहें परवाज़ में हर दम इन्हें वो पर अता करना।।।।
बुज़ुर्गों ने मेरे जीती हर एक हारी हुई बाज़ी।
मेरी नस्लों को भी मौला वही तेवार अता करना।।

(79)

तगारी फ़ावड़ा रख कर खिलौने बेच आते हैं।।
सड़ा खाते हैं घर में और अच्छा बेच आते हैं।।
बड़ी बेटी की तरह भूक से बेटा न मर जाए।
इसी डर से ग़रीबी में ये बच्चा बेच आते हैं।।

(80)

पेट बच्चों का भी भरना था ज़रुरी लेकिन।।
काम फिर भी न किया यार ये अच्छा तूने।
भूक बच्चों की मिटाने जो चला था घर से।
अपने बच्चों को खिलाया वो परिन्दा तूने।।

(81)

मैंने चाहा नहीं दुनिया की तू नेअमत दे दे।।
दाल रोटी में मेरे घर की तू लज़्ज़त दे दे।।
मेरे बच्चे मेरे महमान सवाली खा लें।
इतनी मौला तू मेरे रिज़्क में बरकत दे दे।।

(82)

हाथ चूमे गले से लगा कर दिये।।
सब की नज़रों से पैसे बचा कर दिये।।
घर से बाहर कभी जब मैं जाने लगा।
मेरे बच्चों ने जूते उठा कर दिये।।

(83)

जैसे तैसे ही उसने तो टाला मुझे।।
पर ये बच्चा लगा है निराला मुझे।।
उसको ऊँची भगा लेगई उड़ ले गई।
इस मदरसे के बच्चे ने पाला मुझे।।

(84)

सुबह सादिक़ की वो खुशबू मेरी साँसों में अब तक है।।
मोअज़्ज़ीन की मुनादी भी मेरे कानों में अब तक है।।
मेरे शाना ब–शाना था नमाज़े फ़ज्र में बेटा।
सफ़े अव्वल का वो मंज़र मेरी आँखों में अब तक है।।

(85)

आर्ज़ी खुशियों से हमको सिसकियाँ अच्छी लगी।।
ऊँचे महलों के मुक़ाबिल बस्तियाँ अच्छी लगी।।
जिनको समझे थे बुढ़ापे का सहारा हम वही।
छोड़ कर जब घर गये तो बेटियाँ अच्छी लगी।।

(86)

हो अमल उनका हर एक रोज़ तिलावत करना।।
भूल जाएँ न कभी तेरी इबादत करना।।
नैक मकसद को जो निकले हैं सफ़र पर अपने।
मेरे मौला मेरे बच्चों की हिफ़ाज़त करना।।

(87)

कुछ लोग ज़िन्दगी को बनाने में लग गये।।
कुछ तो नसीब अपना जगाने में लग गये।।
अफ़सोस हमने उनको विरासत में क्या दिया।
बच्चे हमारा क़र्ज़ चुकाने में लग गये।।

(88)

ख़ुशियाँ जहाँ की दे दे तू ईज़्ज़त नवाज़ कर।।
बच्चों को मेरे ईल्म से तू सर–फ़राज़ कर।।
मुश्किल हर एक इनकी हो आसान ए ख़ुदा।
हिज़ो अमान दे इन्हे उम्रे दराज़ कर।।

(89)

जो फिक्र मेरी है तू उसे दूर भगा दे।।
सोई हुई क़िस्मत को मेरी फिरसे जगा दे।।
कांधों पे बहुत बोझ मेरे हो गया यारब।
बच्चों को मेरे जल्द तू रोज़ी से लगा दे।।

(90)

किताबें माँगली मुझसे कभी बस्ता नहीं माँगा।।
गये स्कूल पैदल ही कभी रिक्शा नहीं माँगा।।
जो देखा फ़ीस अब्बू ने भरी है किस तरह उनकी।
कभी बच्चों ने मुझसे फिर कोई ख़र्चा नहीं माँगा।।

बुजुर्ग

(1)

चाहूँ न कभी तुझसे दौलत मेरे अल्लाह।।
हो जाए मेरी पूरी मन्नत मेरे अल्लाह।।
दादा ने दी शक़त तो दादी ने मोहब्बत।
दोनों ही को दे दे तू जन्नत मेरे अल्लाह।।

(2)

महरबाँ हो के देता था कोई वादा नहीं हमसे।।
कोई शिकवा शिकायत भी कभी करता नहीं हमसे।।
पुराना वो शज़र आँगन में दादा ही के जैसा था।
हमें सब कुछ दिया लेकिन कभी चाहा नहीं हमसे।।

(3)

जहाँ में धूप है लेकिन मेरे सर पर घटाएँ हैं।।
मेरी औक़ात क्या है बस मेरे रब की अताएँ हैं।।
ये दौलत और ये शोहरत ये इ़ज़्ज़त और ये अज़मत।
मुझे जो कुछ मिला है सब बुज़ुर्गों की दुआएँ हैं।।

(4)

गुनाहों के अभी मेरे ज़मानतदार बैठे हैं।।
नज़र नीचे ही रखना सर पे पहरेदार बैठे हैं।।
बलाएँ जो निकलती हैं झुका देती हैं सर अपना।
कि मेरे घर के सब बुढ़े बड़े सरदार बैठे हैं।।

(5)

यूँ तो क़िस्मत ने कोई शान न शौकत दी है।।
हाँ मुझे फिर भी मगर प्यार की दौलत दी है।।
मेरी तहज़ीब में गाली न मिली है अब तक।
मुझको एहबाब ने विरसे में मोहब्बत दी है।।

(6)

न मालो–ज़र मैं लाया हूँ न दौलत ले के आया हूँ।।
रियासत सल्तनत कोई न शौहरत ले के आया हूँ।।
गले दुश्मन को हँस–हँस कर मुझे अपने लगाना है।।
बुजुर्गों से मैं अपने ये मोहब्बत ले के आया हूँ।।

(7)

हिफाज़त के लिये घर में कभी जाली नहीं आई।।
मेरे आँगन में काँटों से भरी डाली नही आई।।
हज़ारों तन्ज़ के मारे कोई पत्थर मुझे लेकिन।
मेरे अजदाद की तहज़ीब में गाली नहीं आई।।

(8)

बुजुर्गों को हम अपने आज भी क़ाबिल समझते हैं।।
हमारी हर तरक़्क़ी में उन्हें शामिल समझते हैं।।
वह जिन को इल्म की दौलत मिली अपने बुज़ुर्गो से ।
वही बच्चे बुजुर्गों को बड़े जाहिल समझते हैं।।

(9)

बुजुर्गों की मोहब्बत से मुक़द्दर जग–मगाता है।।
अंधेरा भी उजालों की तरह रस्ता दिखाता है।।
बिठा कर जिसने रक्खा है हिफ़ाज़त से बुजुर्गों को।
परेशानी का साया भी न उसके घर को जाता है।।

(10)

बुजुर्गों की जो सुनता है वही ज़ीशान होता है।।
जो ख़िदमत में लगा होता है वो सुल्तान होता है।।
जो करता है बुजुर्गों से अगर मुँह फेर कर बातें।
हमारे घर में वो बेटा भी ना–फ़रमान होता है।।

(11)

सल्तनत दी है कहीं की न रियासत दी है।।
न तो हाकिम ही बनाया न इमामत दी है।।
भाई मुश्किल में पुकारे तो है दौड़े आना।
मेरे एहबाब ने मुझको ये हिदायत दी है।।

(12)

ख़ाली नुस्ख़ो ही नहीं हमको दवाएँ दी हैं।।
उनके हिस्से की हमें सारी अताएँ दी हैं।।
मुत में हमसे बुज़ुर्गों ने नहीं ली ख़िदमत।
पाँव हमने जो दाबाए तो दुआएँ दी हैं।।

(13)

दादा की क़ब्र नूर से हर दम भरी रहे।।
दादी की क़ब्र गोशए जन्नत बनी रहे।।
नाना पे मेरे तेरी महरबानी हो सदा।।
नानी के सर पे नूर की चादर तनी रहे।।

(14)

वो राजा और रानी की कहानी याद आती है।।
मेरे दादा–ओ दादी की ज़ुबानी याद आती है।।
खुले आँगन में खटिया पर सुहानी रात की घड़ियाँ।
बूढ़ापे में सभी बातें पुरानी याद आती हैं।।

(15)

चलो बचपन में घर से तो दुआएँ साथ चलती हैं।।
जवानी जब निकलती है अदाएँ साथ चलती हैं।।
ग़लत कहते हैं वो तुमसे अकेले ही चले आए।
बूढ़ापे में चलो घर से दवाएँ साथ चलती हैं।।

(16)

टूटेगा मकाँ जब ये सहारे नहीं होंगे।।
उड़ने को बलन्दी से मीनारे नहीं होंगे।।
मिलजुल के जो बैठे हैं बुज़ुर्गों में ए वाहिद।
कल किस को पता था ये नज़ारे नहीं होंगे।।

(17)

ग़मों की धूप जब होगी तो साया याद आएगा।।
परिन्दों के चहकने का वो लम्हा याद आएगा।।
निशानी अपने दादा की कभी माँगेंगे जब बच्चे।
शजर आँगन का तुमको वो पुराना याद आएगा।।

(18)

अब विरासत को सम्भाले हुए हम रखते हैं।।
उनके दरबार में आहिस्ता क़दम रखते हैं।।
बात सुनते हैं मोहब्बत से हमेशा उनकी।
जब भी होता है बुज़ुर्गों का भरम रखते हैं।।

(19)

ज़माने में नहीं हैं पर अभी भी नाने जाते हैं।।
वो अख़्लाको मोहब्बत की वजह से जाने जाते हैं।।
बुज़ुर्गों से ही क़ायम है हमारा आज भी रुत्बा।
उन्हीं के नाम से हम भी अभी पहचाने जाते हैं।।

(20)

हर शाख़े–गुल भी हमने सलिक़े से छाट दी।।
जो ख़ार ज़ार थी वही जड़ से ही काट दी।।
तहज़ीब हमको अपने बुज़ुर्गों से जो मिली।
हमने भी ये किया है वो बच्चों में बाँट दी।।

(21)

मर्ज़ तूने ही दिया तू ही दवा कर या–रब।।
उनके हक़ में सभी मक़बूल दुआ कर या–रब।।
यह दुआ तुझ से है बीमारी बचा को मेरे।
फिर सहतयाबी की दौलत तू अता कर या–रब।।

(22)

माँ–बाप का मकान है अजदाद की ज़मीं।।
उस पर हलाल रिज़्क है कोई कमी नहीं।।
बस्ती हमारी क़ौम की जागीर सी लगे।
एहबाब मेरे छोड़ के क्यों जाऊँ मैं कहीं।।

(23)

टिम–टिमाते ही सही इनको जलाए रखना।।
लाख सूखे हों शजर फिर भी लगाए रखना।।
काम बच्चों को मुसीबत में ये आएँगे खुदा।
मेरी बस्ती में बुज़ुर्गों को बिठाए रखना।।

माँ

हसीं उसकी तरह देखो कोई मूरत नहीं दिखती।
ज़मान में कहीं माँ से भली सूरत नहीं मिलती।।

फूल मुस्काएँगे माहौल निराला होगा।।
माँ जहाँ होगी उसी घर में उजाला होगा।।

लेकर जो धूप घर से मैं सर पर निकल गया।
माँ ने दुआएँ भेजीं तो मौसम बदल गया।।

ख़यालों में सही लेकिन अभी भी थप–थपाती है।।
बगल में लेट कर रातों को माँ लोरी सुनाती है।।

पैरों में अंगार दिखे सर पर लपटी धूप।।
साया बन के आ गया माँ का शीतल रुप।।

माँ की आँख में मैं बसा जैसे उज्वल नीर।
माँ मेरी मुझको लगे जैसे पीर फ़क़ीर।।

आईने में आ गई सूरत जैसी माँ ।
मन मन्दिर में बैठ गई मूरत जैसी माँ।।

आग उगलती धूप में माँ है शीतल छाँव!
बाढ़ दुखों की देख कर बन जाती है नाँव।।

माँ से ही सबको मिला जीवन का उपहार।
माँ से ही ख़ुशियाँ सभी माँ से ही त्यौहार।।

छप्पर उठा के चुपके से आने लगी है धूप।
घर में नहीं है माँ तो डराने लगी है धूप।।

कोई फ़रिश्ता आ गया नेकी के वास्ते।
माँ ने जगाया यूँ मुझे सहरी के वास्ते।।

एक फ़ासला है देखो चराग़ों हवा में बस।
देखा है ये असर भी तो माँ की दुआ में बस।।

माँ को देखा तो ये आँखों ने कहा है हम से।
इससे ज़्यादा तो हसीं चाँद न देखा हम ने।।

नींद आँखों में आने लगी है।।
आज माँ जो सुलाने लगी है।।

मौत घबरा के मुझसे चली जा रही है।
ऐसा लगता है माँ की दुआ आ रही है।।

हज़ारों लज़्ज़तें हों तो कोई माअने नहीं रखतीं।
अगर माँ हाथ से चटनी खिलाए तो वो नेअमत है।।

ज़माने भर की नेअमत तुम चलो माना के खाते हो।
मगर क्या माँ का झूटा भी मयस्सर तुमको होता है।।

मैं पानी जब भी पिता हूँ तो माँ को भूल जाता हूँ।
मगर माँ को जो पिना हो मुझे पहले पिलाती है।।

मुझे मालूम है रमज़ाँ फ़क़त एक बार आते हैं।
मगर बारह महीने माँ मेरी रोज़े से रहती है।।

मोहब्बत और शफ़क़त से खिला देती है मुझको सब।
बताती ही नहीं रोज़े वो किस मन्नत के रखती है।।

बच्चों की भूक प्यास मिटाने से पेश्तर।
माँ ने कभी भी मुँह में निवाला नहीं रखा।।

बुझा बुझा था मेरे घर का हर दिया लेकिन ।
रखा जो माँ ने क़दम घर में रोशनी आई ।।

मिटा ही देती उजालों को आँधियाँ लेकिन।
दुआ ने माँ की चरागों को ज़िन्दगी बख्शी ।।

मैंने चराग माँ की हथेली पे रख दिया।
उजाला देख के आँधी भी मर गई घर में।।

माँ ने जला के रख दिया तूफ़ाँ के सामने।
आँधी भी आ के थम गई उसकी पनाह में।।

माँ ने दहलीज़ से रस्ते को निहारा जब भी।
फिर मेरी राह में हर सिम्त उजाले आए।।

ग़म की झुलस्ती धूप में जलती रही मगर।
साया ख़ुशी का माँ ने मेरे सर पे रख दिया।।

धूप आई है जब कभी सर पर।
माँ घटा बन के साथ आई है।।

धूप से डर है अब किसे सर पर ।
माँ ने आँचल जो तान रख्खा है।।

धूप क़दमों में मेरे बिछती है।
सर पे माँ की दुआएँ रखता हूँ।।

धूप आँगन में जब कभी आई।
माँ ने ला कर के बौ दिये पौधे।।

जब सताएगी तुम्हें धूप तो याद आएगी।
माँ नहीं कहती थी अब पेड़ न कटने देना।।

बेटा गया विदेश तो पलटा नहीं है फिर।
रो-रो के माँ ने दश्त में दरिया बहा दिये ।।

तूफाँ निगल रहा था के माँ की दुआ से फिर।
कश्ती मेरी मचल के किनारे पे आ गई।।

डूबा हुआ वो बेटा न जब माँ को मिल सका।
माँ ने गिरा के आँसू समन्दुर जला दिया।।

बच्चे की डूब को तो जमाना हुआ मगर।
माँ ने गुजारी उम्र समन्दुर के आसपास।।

काँटा चुभा था पाँव में बेटे को देखिये।
आँखों से माँ के फिर भी समन्दुर उबल पड़ा।।

पार तूफाँ ने किया मुझको सहारा देकर ।
वो दुआ माँ की थी कश्ती जो किनारे आई ।।

लेने को जान सर पे क़ज़ा आ गई मगर।
माँ की दुआएँ थी जो मेरे काम आ गई।।

आई सरहाने मेरे क़ज़ा फिर पलट गई।
माँ ने जो फूक कर मुझे पानी पिला दिया।।

तबीबों हार बैठो तो मुझे माँ से मिला देना।
वो सर पे हाथ रख देगी क़ज़ा फिर छू नहीं सकती।।

जहाँ देखो वहाँ मुझको क़ज़ा बस घेर लेती है।
मगर माँ की दुआओं से हमेशा बच निकलता हूँ।।

मेरे हाथों से न जाती है सुबह तक खुश्बू।
पाँव माँ के जो दबाते हुए सो जाता हूँ।।

क़दम बोसी किये माँ की चला हूँ जब कभी घर से।
किसी भी राह में मैंने कभी ठोकर नहीं खाई।।

मैं अपनी माँ के क़दमों से लगा लाया हूँ होंठों को।
करम ये हो गया खुश्बू मेरे होंठों से लिपटी है।।

माँ नहीं थी घर में जब तक हर कोई तन्हा रहा।
माँ के रखते ही क़दम फिर घर में मेला–सा लगा।।

ज़ईफ़ूल उम्र है माँ और बहुत बीमार है लेकिन।
कमी यारब ख़ज़ाने में तेरे कुछ हो नहीं सकती।।

बहुत कमज़ोर है माँ और पड़ी है लाख बिस्तर पर।
मगर तू उम्र में बरकत मेरे मौला अता कर दे।।

करम तेरा है मुझ पर ये मेरी माँ है मेरे घर में।
ये साया देर तक यारब मेरे सर पर बना रखना।।

रहेगा घर मेरा बेटा उसे राहत अता होगी।
मेरी माँ राह तकती है बहुत इतवार के दिन की।।

उधड़ जाते हैं रिश्ते जब कभी बातों ही बातों में।
किसी से कुछ नहीं बनता तो माँ तुरपाई करती है।।

वो थक कर लेट भी जाए दुआ करती है बिस्तर से।
अगर बच्चे सफ़र में हों उसे कब नींद आती है!।

मैं हिजरत पर चला जाऊँ ज़रूरत मुझसे कहती है।
मगर माँ की ज़ईफ़ी है इजाज़त जो नहीं देती।।

नहीं आमाल ऐसे के ख़ुदा यूँ बख़्श दे मुझको।
मगर ख़िदमत मुझे माँ की जहन्नुम से बचा लेगी।।

कौन मालिक है ज़माने का ख़बर थी किसको।
माँ को समझे तो ये जाना के ख़ुदा होता है।।

माँ थी जो घरमें कोई भी उफ़ तक न कर सका।
माँ क्या चली गई है सभी बदज़ुबाँ हुए।।

एक घर में देखे आज दो चुल्हे अलग-अलग।
माँ क्या गई है घर से मेरा घर बिखर गया।।

रोना जो अगर होता है रोता हूँ मैं छूप कर।
रोता जो मुझे देखा तो माँ फूट पड़ेगी।

मैं अपनी माँ का हर सदमा यक़ीनन झेल सकता हूँ।
मगर उसको मेरे यारब कोई सदमा नहीं देना।।

जो कॉलेज में पढ़ा मैंने सभी कुछ भूल बैठा हूँ।
सबक़ माँ ने दिया था जो वही बस याद है मुझको।।

माँ घर से मेरे हो के जो नाराज़ गई है।
बहनों ने मेरे हाथ पे राखी नहीं बाँधी।।

यूँ तो मिलने बहन से गई थी मगर।
माँ मुझे याद आई बहुत देर तक।।

भाई बहनों के यहाँ है कभी मामा के यहाँ।
माँ जहाँ जाती है जन्नत भी चली जाती है।।

माँ ने दुपट्टा फ़ाड़ के कुर्ता बना दिया।
ए ईद फ़ख़्र कर कि मैं ईदगाह पे आ गया।।

हसीं उसकी तरह कोई जहाँ में हो नहीं सकता।
जिसे सब चाँद कहते हैं वो मेरी माँ की सूरत है।।

मेरी बीमार हालत में तो बाली बैच दी उसने।
पढ़ाई के लिये पौते की कंगन बैच आई है।।

सलामी उनको देता हूँ शहादत की ख़बर सुन कर।
जो अपने लाड़ले बेटे वतन को दान करती हैं।।

अब्बू

मेरे अब्बू ने मुझको इस क़दर षफ़्क़त से पाला है।
चुभा जब पाँव में काँटा तो पलकों से निकाला है।।

शहर की फिर फ़िज़ा बदली ईलाही ख़ेर कर देना।
है फ़ाक़े घर में और अब्बू कमाई पर निकलते हैं।।

ये मँहगाई का आलम और जवाँ होती मेरी बहनें।
है घर का बोझ सर पर और मेरे अब्बू अकेले हैं।।

हम आँसू पोछते आए थे अपने घर जो मेले से।
घड़ी अब्बू ने बेची थी खिलौने ले के आए थे।।

फटा कुर्ता था अब्बू का उठाए थे मुझे सर पर।
बताओ इस अदा से भी कोई ईदगाह जाता है।।

मेरे अब्बू के षानों से मेरा सर यूँ नहीं उठता।
ये मौक़ा आज है कल की ख़बर किसको ख़ुदा जाने।।

अकेला पड़ गया हूँ तो मुझे आँखें दिखाते हैं।।
मेरे अब्बू के आगे सब कभी ये सर झुकाते थे।।

मेरे अब्बू की तुर्बत से मुझे आवाज़ आती है।
बहुत दिन हो गये बेटा ज़रा सूरत दिखा जाओ।।

मैं जो अब्बू को मस्जिद तक सहारा दे के लाया हूँ।
फ़रिश्ते झूम कर बोले तुझे जन्नत मुबारक हो।।

मेरे अपने मुक़द्दर पर मुझे यूँ रश्क आता है।
मेरे शानों पे अब्बू ने कई रातें गुज़ारी हैं।।

बुढ़ापे में सहारे की ज़रुरत पेश आई जब।
भरोसा मेरे अब्बू ने मेरे शानों पे रख्खा है।।

सहारा बन के अब्बू का मैं अपने घर से निकला हूँ।
खुदा की रहमतें आकर मेरे क़दमों से लिपटी हैं।।

आज अब्बू जो नहीं हैं तो पता चलता है।
कितना मुश्किल है बड़े घर का यूँ मुख्यिा होना।।

खेलते खेलते थक कर मैं पड़ा था घर में।
पाँव वालिद ने मेरे ख़ूब दबाए थे कभी।।

अरे ऐ आसमाँ हट जा तेरा एहसाँ नहीं लेंगे।
हमारे सर पे रख्खा है अभी तो हाथ अब्बू ने।।

कहते हैं जिसे बाप है क़ुरबानी का पैकर।
जब बाप बनोगे तो ये एहसास भी होगा।।

दस्ते शफ़क़त था वालिद का बे-ख़ौफ़ था।
अब ज़माने के डरने है घेरा मुझे।।

दोबारा गर कमाई के लिये परदेस जाते तुम।
तुम्हारी माँ की तरह हम बिना काँधे के मर जाते।।

किया सर फ़ख़ से ऊँचा ख़बर माँ-बाप ने सुन कर।
कटा कर सर जो बेटे ने वतन की आबरू रखली ।।

उठा कर जब मोहब्बत से मैं अपने सर पे रखता हूँ।
मेरे माँ-बाप की जूती मुझे सुल्ताँ बताती है।।

वतन की आबरू रखने जियाले भेज देते हैं।
कभी मातम नहीं करते वो बेटों के जनाज़ों पर।।

वली के दर पे जाने से कभी रोका नहीं हमने।
मगर माँ–बाप की क़ब्रें तुम्हें आवाज़ देती हैं।।

वो लोग जहन्नुम में ही जाएँगे यक़ीनन।
जो लोग कि माँ–बाप की ख़िदमत नहीं करते।।

मिटा कर अपनी हस्ती को मुझे इन्साँ बनाया है।
यही एहसान क्या कम है मेरे माँ–बाप का मुझ पर।।

वालिद को मेरे बख़्श दे रमज़ान की दुहाई।।
माहे मुबीं के सदक़े जन्नत में हो रसाई।।

हुई मुद्दत उन्हें गुज़रे मगर क़ायम है डर अब भी।
क़दम जब घर में रख्ता हूँ अदब के साथ रखता हूँ।।

☆☆☆

भाई

बोझ सर का मेरे कुछ कम न हुआ है लेकिन।
भाई जब सामने आया तो थकन–सी उतरी।।

फ़िक्र भाई को है बच्चों की अभी तक मेरे।
वो अलग रहके भी चुल्हे पे नज़र रखता है।।

विरान–सी पड़ी थी मेरी सारी ज़िन्दगी।
भाई ने घर में आके गुलिस्ताँ बना दिया।।

रिश्ते की बात आई तो ऐसा हुआ के फिर।
भाई का नाम लेते ही आँसू निकल पड़े।।

रिश्ते अज़ीज़ हैं यूँ ज़माने में सब मगर।
रूत्बा बड़ा है भाई का एक बाप की तरह।।

आए थे सारे घर को जलाने के वास्ते।
भाई खड़ा जो हो गया दुश्मन पलट गये।।

दफ़ना के लोग चल दिये भाई मेरा मगर।
तन्हा लहद पे बैठ के रोता रहा बहुत।।

इज़्ज़त शहर में फिरसे मेरी माँ की बड़ गई।
जब से विदेश भाई कमाने चला गया।।

आँखें जो डब-डबाई है अब्बू की याद में।
भाई ने मुझको बड़ के गले से लगा लिया।।

अब्बू की याद ने मुझे जब भी सताया है।
भाई के पास जाके गले लग गया हूँ मैं।।

सवाल तक भी न भाई ने फिर किया मुझसे।
मैं शर्मसार हूँ अपनी ग़रीब हालत पर।।

परेशाँ है मेरा भाई मेरे इस चिड़-चिड़पन से।
ये पागलपन मेरा लेले मुझे अख़्लाक़ अच्छा दे।।

ज़माने से तो मिलते हो क़दम आगे बड़ा कर तुम।
सगे भाई से अपने क्यों मुसाफ़ा तक नहीं करे।।

ये क्या हुआ के हो गया मेरे ख़िलाफ़ वो।
भाई ने मेरे देखलो एक दल बना लिया।।

☆☆☆

बहन

खेल ही खेल में जब तोड़ के रोया घर में।
मेरी बहनों ने दिया अपना खिलौना घर में।।

मेरी बीबी मेरे बच्चे मुझे है जान से प्यारे।
ईघर में माँ के जैसा ही बहन से प्यार करता हूँ।।

माँ घर से मेरे हो के जो नाराज़ गई है।
बहनों ने मेरे हाथ पे राखी नहीं बाँधी।।

सुनी कलाई चीख के कहती है फिर यही।
ससराल में बहन न किसी की जले कभी।।

आते हुए देखो जो कोई अजनबी औरत।
नज़रों को सहाबा की तरह अपनी झुकालो।।

जिस तरह किया पर्दा बेटी ने नबी की।
यारब मेरी बहनों को वो तौफ़ीक़ अता कर।।

हज़ारों बार बहकी हैं सरे बाज़ार यह नज़रें ।
हज़ारों बार रोका है मुझे बहनों की राखी ने।।

मेरी बहनें कभी मुझसे किनारा कर नही सकतीं।
खुदाया ख़ेर करना अब तलक राखी नहीं आई।।

परेशाँ हो वो कितनी भी कभी शिकवा नहीं करती।
किराया गर नहीं हो तो वो राखी भेज देती है।।

रहे नाराज़ वो मुझसे मगर इतना तो करती है।
ख़बर एहबाब से मेरे वो ले लेती है राखी पर।।

किसने पुछा है बहन तेरी ज़रुरत किया है।
मुतमई हो गए भाई तो विरासत ले कर।।

बड़ा देती है ताक़त फिर मेरे कमज़ोर बाजू की।
मेरी बहनें कलाई पर जो राखी बाँध देती हैं।।

☆☆☆

बच्चे

देखा है मुझको जब कभी गर्दो गुबार में।
बच्चों ने मेरे भूल के सिक्का नहीं माँगा।।

आँसू सिसक के पी लिये ग़म खा के सो गये।
बच्चे भी उस ग़रीब के साबिर थे किस क़दर।।

मजदुरी कर के लोटा हूँ पैसे नहीं मिले।
अब कैसे मुस्कुराऊँ मैं बच्चों के सामने।।

रहें महफ़ूज़ आफ़त से हर एक आज़ार से हर दम।
मेरे बच्चों को यारब तू बड़ी उम्रें अता करना।।

बुजुर्गों की दुआओं से अगर महरुम रहता मैं।
मेरे बच्चे बुढ़ापे में मेरी ख़िदमत नहीं करते।।

मेरे मौला मेरे बच्चों को अता कर रोज़ी।
मैंने कब ताजो हुकूमत की तमन्ना की है।।

बुढ़ापे में मेरे तच्चे सहारा बन के चलते हैं।
कमाई उम्र भर की यूँ मेरे अब काम आई है।।

बुढ़ापा आ गया बेटे हुए पौते हुए लेकिन।
गुज़ारी उम्र हमने बस इसी मिट्टी के कमरे में।।

एक ही छाता है घर में मेरे अब तक गुर्बत।
मुझको मजदुरी पे बेटे को है पढ़ने जाना।।

अगर हो जुल्म की जो इन्तेहा तो याद भी रखना।
ज़माने में मेरे बेटे कभी बुज दिल नहीं रहना।।

चलाना तेग़ और भाला उतर जाना तू मैदाँ में।
अना को आँच जो आए तो सर अपना कटा देना ।।

मैं अभी और भी कुछ वक़्त जो ज़िन्दा रहता।
मेरे बच्चें भी उठा लेते जनाज़ा मेरा।।

जो कुछ कमाया मैंने वो बेटों को दे दिया।
बेटी उधार ला के कफ़न दे गई मुझे।।

मैंने बेटी को तो कुझ भी न दिया है लेकिन।
मेरी बेटी ने कफ़न तक भी दिया है मुझको।।

बच्चों को मैंने सरपे बिढ़ाया ये सोच कर।
हो कर बड़े ये मेरा जनाज़ा उठाएंगे।।

☆☆☆

जो कुछ कमाया मैंने वो बेटों को दे दिया।
बेटी उधार ला के कफ़न दे गई मुझे।।

मैंने बेटी को तो कुझ भी न दिया है लेकिन।
मेरी बेटी ने कफ़न तक भी दिया है मुझको।।

बच्चों को मैंने सरपे बिढ़ाया ये सोच कर।
हो कर बड़े ये मेरा जनाज़ा उठाएंगे।।

☆☆☆

बुजूर्ग

सामने जब कभी आए हैं जमाने वाले।।
मेरी हिम्मत पे चले आए घराने वाले।।

मुसाफिर की तरह खुद को हमें रस्ते में रखना है।।
हमेशा अपने कपड़ों को हमें बस्ते में रखना है।।

रसमन किसी ने हाथ कभी सर पे रख दिया ।
आँसू की शक्ल आँख से धारे निकल पड़े ।।

सुनाता हूँ मैं बच्चों को ज़माने भर की बातें पर।
मेरे होंठों से ग़ायब हैं मेरे अजदाद के क़िस्से।।

मेरे अजदाद ने कश्ती जला कर जंग जीती थी।
मेरे अल्लाह मुझको भी वही तू हौसला देदे।।

अभी जो मौत भी आए परेशाँ कर नहीं सकती।
अभी अजदाद ने मेरे मेरा सदक़ा उतारा है।।

नहीं तेराक़ तुझ–सा मैं मगर है फ़ख़्र ये मुझको।
मेरे अजदाद ने हुनर मुझे सारे सिखाए हैं।।

अदब तहज़ीब की ख़ुश्बू मेरे घर से यूँ आती है।
कमाई ला के दादी को मेरा जो लाल देता है।।

हमने बुज़ुर्ग देखे तो रोके वहीं क़दम।
लूच्चे लफ़ंगे कूद के आगे निकल गये।।

मेरा अख़्लाक ठंडा है मगर मेरे बुज़ुर्गों–सी।
लहू में अपने रख्खी है छुपा कर सूर्ख़ियाँ मैंने।।

हमारे घर के पीछे जो बड़ा तालाब है उसकी।
हमारे बाप दादा ने हमें जागीर बख़्शी है।।

मेरे बेटे तुझे मैं ये विरासत दे के जाता हूँ।
इसी तालाब में खेली हैं सातों पीढ़ियाँ मेरी।।

पकड़ कर जिनकी ऊँगली रोज़ मैं मस्जिद में आता था।
मेरे कांधे पे रख कर हाथ वो मस्जिद में आए हैं।।

गिरोगे जब कभी तुम तो है हड्ठी टूटना मुमकिन।
बुजुर्गों को ये बारिश ने रियायत दी नहीं अब तक।।

परेशाँ हाल हूँ इतना जीया जाता नहीं मुझसे।
मेरे एहबाब से कहदो मेरे हक़ में दुआ कर दे।।

हमारे बाप दादा ने कभी हारी नहीं बाज़ी।
हमारी ज़िद के आगे तो सिकन्दर हार जाता है।।

मेरे पौते यक़ीनन पाँव दाबेंगे मेरे एक दिन।
मेरे बेटे भी दादी के दब कर पाँव सोते है।।

☆☆☆